देखा-देखी

वृन्दावनलाल वर्मा

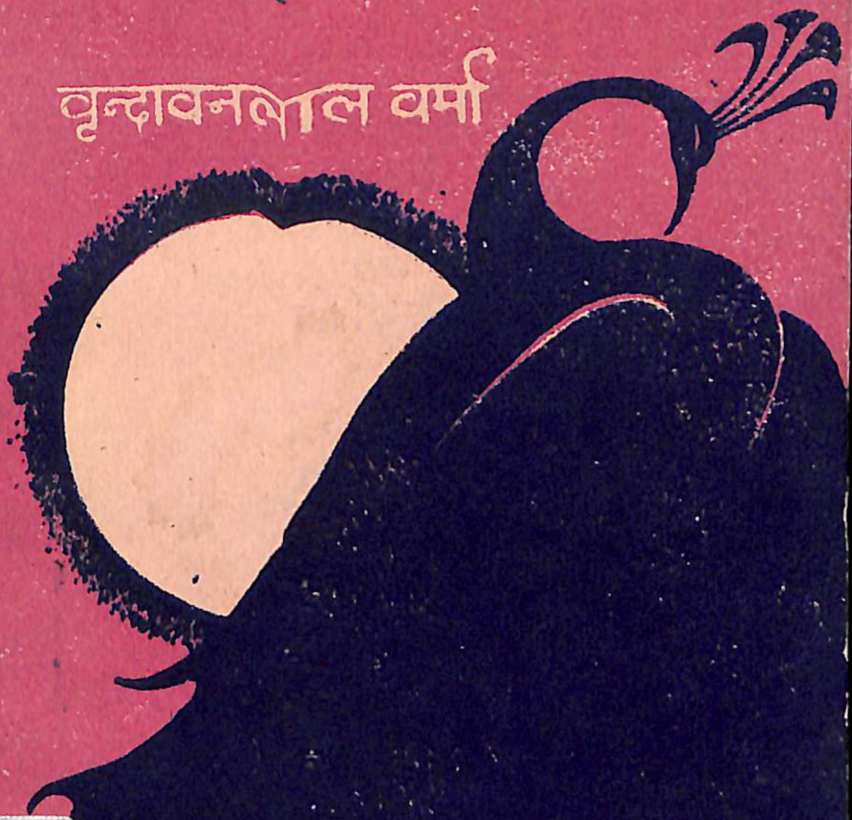

H
812.6
V59D

मयूर-प्रकाशन
झांसी

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SHIMLA

देखा-देखी

(सामाजिक नाटक)

Vrindavan Lal Verma

वृन्दावनलाल वर्मा

Mayur Prakashan

मयूर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड झाँसी

Jhansi

CATALOGUED

प्रकाशक :—

सत्यदेव वर्मा, बी० ए०, एल-एल. बी.

मयूर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, झाँसी ।

H
812.6
V59D

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 39876
Date 21.6.72
SIMLA

Library IIAS, Shimla
H 812.6 V 59 D
00039876

द्वितीयावृत्ति—१९५९

तृतीयावृत्ति—१९५६

मूल्य—८७ नये पैसे

मुद्रक :

रामसेवक खड़ग

स्वाधीन प्रेस, झाँसी

दो शब्द

कई भले घर मैंने देखे हैं जो अपरिमित व्यय के कारण उजड़ गये। व्याह बरातों में घर फूक तमाशा देखने वालों की कमी पहले भी नहीं थी, अब तो प्रत्येक 'शुभ अवसर' पर अशुभ व्यय करने की सीमा बढ़ती दिखलाई पड़ रही है। आय कम खर्चा अधिक। भ्रष्टाचार की काया स्थूल होती चली जा रही है। रिश्वत और बेईमानी के समाचार आये दिन सुनने को मिलते हैं। भ्रष्टाचार के रोकने के लिये कानून हैं ही, उसके वर्तने के लिये अधिकारी भी बढ़ा दिये गये हैं। परन्तु केवल कानून और अधिकारी अधर्म की कुवृत्ति को कैसे समाप्त कर सकेंगे ?

एक युग रीति थी कि व्याह के समय साधारण गृहस्थ चार पाँच रुपये तक की बारूद फूंक ले। अब चार पाँच सौ रुपये तक का धुआँ इस मद पर उड़ा दिया जाता है ! भल्लू ने तड़क भड़क पर पाँच सौ कूड़ा कर दिये तो कल्लू छः सौ कर डालेगा ! सार्वजनिक संस्थायें तक आतिशबाजी के धड़ाकों पर समारोह के भड़ाके प्रदर्शित करने लगी हैं। इस देखा देखी में समाज की जो हानि हो रही है उसका बन्द किया जाना बहुत आवश्यक है। कानून से यह नहीं हो सकता।

पाश्चात्य देशों की कुछ प्रथाओं का भी अनुकरण किया जाने लगा है। जन्म दिवस पहले जिस सादगी के साथ मनाया जाता था वह बहुत कम होती जा रही है। बर्थ डे केक—मोटे रोटे -- ने और उसके सहयोगी उपकरणों ने कई कुटुम्बों में रोब के साथ अपना स्थान बनाना आरम्भ कर दिया है। बेमेल खिचड़ी पकाई जा रही है। व्यर्थ व्यय के व्यापक प्रसंग पर कुछ कहना था तो इसी को मैंने अपना माध्यम बनाया।

इस नाटक के सभी पात्र अपने दूर और पास के वातावरण से चुनकर रक्खे हैं। नाम अवश्य बदल दिये हैं। घटनायें सच्ची हैं, परन्तु एक या दो परिवार या स्थानों की नहीं हैं। एक गीत के लिये नाटक में मैंने स्थान छोड़ दिया है। अवसर की उपयुक्तता और पात्र की योग्यता के अनुसार मंच पर गीत प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि रंग मंच के संचालकों और अभिनेताओं के कुशल प्रदर्शन द्वारा यह नाटक समाज की कुछ सेवा कर सका तो मैं बहुत कृतार्थ हूँगा।

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

चांदीलाल

इन्द्रानी

पिंगला

नरसिंह

नन्हे सेठ

वीरू

बीरू की मां

हरनारायण

चिमनलाल

भजन

देखा-देखी

पहला दृश्य

[मध्यम श्रेणी के गृहस्थ का 'गोल कमरा', जो गोल नहीं चौकोर है; फिर भी कहेंगे उसे 'गोल कमरा', ही। यह मझोले वर्ग के एक शहर में है। कमरे का रुख बाहर खुले फैले आँगन की ओर है। बाहर जाने आने के लिये बाईं बगल में द्वार है। दूसरा द्वार दाईं ओर भीतर जाने के लिये है। एक कोने में मेज पर रेडियो सैट रक्खा है। सोफा सैट, कुर्सियाँ सब अस्त व्यस्त रक्खे हैं। नीचे मैला-सा फर्श बिछा है। तह किया हुआ एक नया अच्छा फर्श एक कुर्सी से टिका है। दीवारों के ऊपर रोशनदान हैं, जिनसे कमरे में काफी उजाला आ रहा है। बाहर के द्वार से भी काफी प्रकाश आ रहा है। सामने की दीवार के ताक में एक बड़ी घड़ी रक्खी है। चार बज रहे हैं। चांदीलाल और हरनारायण बाईं बगल के दरवाजे के सामने पड़ी कुर्सियों पर बैठे हैं। चांदीलाल की आयु चालीस के लगभग होगी। मालूम पड़ता है जैसे पचास का हो। लगता है जैसे पहले काफी हँसता रहा होगा पर अब कम हँस पाता है। कपड़े साफ सुथरे पहिने है, पर वे मूल्यवान नहीं है। हरनारायण आयु में चांदीलाल से थोड़ा ही कम है, परन्तु बहुत स्वस्थ है। कपड़े

खादी के सीधे-साधे साफ कपड़े पहने है। हंसमुख हैं। बहुत कंजूस, सदा सस्तेपन पर निगाह डालने वाला। चांदीलाल का शुभ चिन्तक मित्र है। चांदीलाल एक बड़े दफ्तर का महत्वपूर्ण 'बाबू' है जिससे हरनारायण को कभी-कभी अपने व्यवसाय के सिलसिले में काम पड़ता है। चांदीलाल कुर्सी के डण्डे पर नोट बुक साधे फाउन्टेनपैन से कुछ निशान लगा रहा है]

हरनारायण—मैं तो बैठे-बैठे थक गया। तुम्हारा यह सूचीपत्र समाप्त होने को ही नहीं आ रहा है ?

चांदीलाल—(कमरे के भीतरी भाग की दिशा में हाथ और आँख का संकेत इस प्रकार करते हुये जिससे यह भाव व्यक्त हो कि करूं क्या, साथ ही यह भी कि इस असमर्थता का साथ मेरा विनोद और आनन्द भी दे रहा है) श्रीमती जी ने जितनी चीजें लिखवाई थीं उन्हें देख रहा था—

हरनारायण—भाभी जी का दिमाग—

चांदीलाल—(सिर और उङ्गली के संकेत से तुरन्त रोकते हुये) बहुत अच्छा है। (भीतर वाले दरवाजे की ओर देखकर हरनारायण के विचार और वाक्य की दिशा पलटने के लिये) लड़के का जन्म दिन कुछ धूम-धाम से तो मनाया ही जाता है। बड़े साहब, छोटे साहब, दफ्तर के बाबुओं, ठेकेदारों इत्यादि और लड़के के साथियों को मैं भी न्योता देना चाहता था, परन्तु उन्होंने कमी करादी तो बस बड़े साहब की मेम साहब पिङ्गला जी को ही—

हरनारायण—जानता हूं खूब चाय पीती हैं और पिलाती हैं। जरूर आयेंगी।

चांदीलाल—ठहर भी। श्रीमती पिंगलाजी, पड़ौस की कुछ स्त्रियां, लड़के-लड़कियां और एक दो मिलने वाले, बस।

हरनारायण—बस ! फिर भी इतना खर्चा !! बच्चों का जन्म दिन तो सभी के यहां मनाया जाता है, फिर इतना ऊलजलूलपन तुम्ही सरीखे मूर्ख करते हैं। (हँसता है)

चांदीलाल—रिवाज चल गया है वे। (वे एक दूसरे के कहने का बुरा नहीं मानते) रीत-रिवाजों की खिचड़ी सदा से पकती चली आई है। क्या किया जाय ? पश्चिम और पूर्व का समन्वय।

हरनारायण—क्या कहना है इस खिचड़ी समन्वय का—छटाक भर चावल, एक तोला दाल, सेर भर निमक और दो सेर मिर्चा ?

चांदीलाल—यह लो ! अजीब सनकी हो !! गाना बजाना होगा, बच्चों का नृत्य—

हरनारायण—बॉल डान्स भी ? किसी भी पुरुष के साथ कोई भी स्त्री नाचे ?

चाँदीलाल—अपने यहाँ तो नहीं होगा, पर कहीं कहीं यह भी होने लगा है। प्रगति की बात है—

हरनारायण—या कुगति की ?

चांदीलाल—लोग कहते हैं, कई जगह मैंने पढ़ा भी है कि संस्कृति के विकास के लिये है। कुछ जरूरी सा भी है।

हरनारायण—यह सब ? भई वाह ! अपने समाज की लाज का चाहे मुँह काला क्यों न हो !

चांदीलाल—इसीलिये तो वैसा कुछ भी अपने यहां नहीं होगा। मैं चाहता भी तो तुम्हारी भाभी न होने देतीं। उनके दिमाग की बाबत कहा है न मैंने कि वाह !

हरनारायण—और वह केक वाली बात ? वह मोटे रोटे की बात किस दिमाग की उपज है ?

चांदीलाल—(अनचाहे भी संकेत से वर्जित करते हुये) भई, सुझाव मेरा और हार्दिक समर्थन उनका। तुम्हें बनवा के लाना है यह बड़ा रोटा ! (मुस्कराकर) मजा रहेगा। आधे दर्जन मोमबत्तियां भी लेते आना। रोटा जरा बड़ा रहे क्योंकि विलायत के किसी भी देश से हमारा देश बड़ा है।

हरनारायण—(बिना ही रुचि के) और कोई सामान बाकी है ?

चांदीलाल—(नोटबुक उलट-पुलटकर और कमरे के बिखरे हुये सामान पर आंखें घुमाते हुये) नहीं सब आ गया है। तुम अब जाओ। मैं उनसे भीतर कुछ बात करके एक जगह जाऊँगा। तब तक वह कमरे का सामान ठिकाने से लगवा देंगी। अभी तो समय है।

(हरनारायण बाहर के द्वार से जाता है। चांदीलाल भीतर के द्वार से घर में)

(भीतर से ग्रामोफोन पर चढ़ी चूड़ी से शहनाई बजने की आवाज आ रही है। इन्द्रानी आती है। उसकी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आकृति आकर्षक है। कपड़े फैशन के पहिने है, परन्तु कीमती नहीं हैं। कमरे का सामान इधर-उधर करते-करते थक जाती है—या खीझ जाती है)

इन्द्ररानी—भजन ! ओरे भजना !!

(भीतर से)—जी आया।

इन्द्रानी—कितना काम करने को पड़ा है, एक तू कि चिल्लाते चिल्लाते मेरा गला बैठ गया, परन्तु 'जी आया, जी आया, कहने के सिवाय और कुछ नहीं करता। चल इधर !'

(भजन का प्रवेश। भजन अधेड़ अवस्था का नौकर है। मैले कुर्ते की अस्तीनें चढ़ाये है। हाथ चूने से सने हुये हैं। उसके थोड़े से छींटे ठोड़ी, गाल और नाक पर भी हैं। धारीदार मैला जांघिया पहने है। कुछ

लम्बी मूछें बहुत बेतरतीब हैं। दाढ़ी बहुत दिनों से नहीं बनी है। प्रायः आंखें नीचे किये रहता है, जब उठाता है तब उनसे भोलेपन के बीच-बीच में काइयांपन झलक जाता है।)

भजन—जी आपने रसोई घर की पुताई के लिये कहा था। वहां कुछ होना है न···यह चूना···

इन्द्रानी—चूने के बच्चे, हाथ धो डाल जल्दी से और इधर आ। देख कितना काम बैठक के सजाने का ही पड़ा हुआ है! रसोई घर की पुताई पीछे होगी, यह सब पहले हो जाना चाहिये।

(भजन जाता है)

(मेज के तह किये हुये भिन्न-भिन्न आकार प्रकार और रङ्गों के आवरों को खोलती देखती है। सभी आवरे कीमती हैं। एक दो अपेक्षाकृत अधिक मूल्य के हैं। नीचे पुराना फर्श बिछा हुआ है। उस पर एक ओर तह किया हुआ नया फर्श रक्खा है। कमरे में मेज कुर्सियां ठिकाने से रक्खी थीं उन्हें इन्द्रानी बेतरतीब करके फिर ठीक क्रम से लगाने का प्रयास करती करती खीझ उठती है।)

इन्द्रानी—भजना रे!

(भीतर से) आया। (दौड़ता हुआ आता है। वह हाथ मुंह धो चुका है)

भजन—मैं सब सामान अभी ठिकाने से लगाये देता हूं।

इन्द्रानी—अपना सिर लगाये देता है। पहले जो लगाया था वह बहुत ही बेसिर पैर का और भोंड़ा था। उसे ठीक करने में ही मेरी कमर टूटी जा रही है—

भजन—आप बतलाती जावें मैं सामान लगाता जाऊंगा।

(इन्द्रानी एक कोने में कुर्सी पर बैठ जाती है)

इन्द्रानी—सब सामान एक ओर करके पहले तो यह नया फर्श बिछाओ।

भजन – अकेले ! मैं बीरू को बुला लूं ।

इन्द्रानी—मन में जो आवे सो कर मैं तो परेशान हो गई ।

(भजन बाहर वाले दरवाजे पर जाकर चिल्लाता है—'बीरू ! बीरू भैया !!' कुछ दूर से आवाज आती है—'आया ।' भजन दरवाजे पर खड़ा रहता है । बैठक के बगल वाले दरवाजे से नरसिंह आता है । तरुण है । बढ़िया चप्पल, बढ़िया पतलून और बनियान पहिने है । कन्धे पर कीमती कपड़े की लोहा की हुई बुशशर्ट, रङ्ग जिसका हलका गुलाबी है, डाले है । सिर के बाल लम्बे और चिकने हैं, परन्तु कंघी नहीं किये है)

नरसिंह—ममी आप तो व्यर्थ ही इतनी परेशानी हो रही हैं ! हुआ जाता है काम । अभी तो समय है ।

इन्द्रानी—है तो समय ! लोग आने वाले होंगे, यहां देखो तो सब सामान कूड़ा कर्कट की तरह फैला हुआ है ।

नरसिंह—थोड़ी देर पहले जब मैं यहां आया था तब तो ऐसा बेठिकाने का नहीं था; अब देखता हूं तो सचमुच जैसे मनुसपलीती का कूड़ा घर हो ! भजन आ जावे तो मैं और वह सब ठीक कर देंगे ।

इन्द्रानी—हे राम ! तेरी बरस गाँठ न हुई मानो मेरी हुई !! जा भीतर, अपने बाल-वाल ठीक करले । कितना भद्दा लग रहा है ! भजन बीरू को ला रहा है । वे दोनों मिलकर सामान लगा लेंगे ।

नरसिंह—ममी आप भीतर का कामकाज देखें, मैं कमरा सजवाये देता हूं ।

इन्द्रानी—जैसा पहले था वैसा ही न ? अरे नरसिंह तू अट्ठारह साल का तो हो गया, पर बना रहा निरा-भोंदू ही ।

नरसिंह—भोंदू !! उफ !! (अपने कपड़ों पर क्षणिक दृष्टि डालते हुये) जो मन में आता है बक डालती हैं आप ! (इन्द्रानी क्षुब्ध और स्तब्ध)

(नरसिंह कुछ आतुरता के साथ इधर-उधर पड़े हलके सामान को देखता है मानो सोचता हो कि कहां क्या रक्खा जावे कि सुरूप जाने पड़े)

इन्द्रानी––(यकायक) मैं बक डालती हूं ! आज तेरा जन्म दिन न होता तो देखती तुझे ।

(दरवाजे के एक किनारे भजन के साथ बीरू आकर ठिठक जाता है । बीरू किशोर अवस्था का है, कपड़े सीधे सादे पहिने–जांघिया, अद्धी कमीज, नंगे पैर है । बीरू संकेत में पूछता है कि बात क्या है ? भजन संकेत में ही उत्तर देता है कि चुप रहो, एक क्षण ठहर जाओ)

(भीतर के आंगन से कुछ शब्दों की उझली हुई आहट आती है जिससे इन्द्रानी का ध्यान उस ओर आकृष्ट होता है)

नरसिंह—माता जी, लड़कियाँ आ उठी हैं ।

इन्द्रानी—हां––

नरसिंह––(भजन और बीरू को देखकर) ये दोनों आ गये ममी । (इन्द्रानी का क्षोभ कम हो गया है)

(बीरू और भजन आते हैं)

इन्द्रानी––अरे हां बीरू, बड़ा अच्छा है । (बीरू बिना फुसलाहट के भी काम करने को तैयार है) भजन की मदद कर दे । यह सब ठीक ठिकाने से लगाना है ।

भजन––हां बीरू––

नरसिंह––मैं भी हाथ बँटा लूंगा यानी––(इधर उधर हाथ फेकता है जैसे निर्देशन मात्र करेगा)

इन्द्रानी––अरे नहीं । (पिघलती हुई) बेटा नरसिंह, तू आज थकाने वाला कोई काम नहीं करेगा ।

नरसिंह––खेल-कूद भी बन्द !

इन्द्रानी––(मुस्कराती हुई) तू बड़ा ढ़ीठ हो गया है। सामान इधर का उधर उठाये धरेगा तो कपड़े मैले हो जायेंगे।

नरसिंह––अच्छा, अच्छा कुछ नहीं करूँगा। आप भीतर जावें (भीतर आंगन में शोर और भी बढ़ता है) मैं सामान लगवाये देता हूं।

(भीतर से किसी बुढ़िया के स्वर में)––इन्द्रानी ! ओ इन्द्रानी !!

इन्द्रानी––आई, आती हूँ। पुजारिन बुढ़िया आ गई है। भीतर जाती हूं। देख सामान की सजावट में भद्दापन न आने पावे (जाती है)

नरसिंह––(बुशशर्ट एक ओर रखकर, खिलाड़ी होने के नाते) लग तो जाओ दोनों पहले इस फर्श के बिछाने पर। (पतलून की एक तरफ गहरे रङ्ग का सूत चिपका हुआ है उसे अलग करते हुये) फिर सामान लगाने में मैं भी हाथ बटा लूँगा––जरूरत पड़ी तो।

भजन––नहीं मालिक, हम दोनों सब ठीक-ठीक करे लेते हैं। आप तो बतलाते जाइये।

नरसिंह––नहीं जी मैं खिलाड़ी हूं। कुछ तुम करो, कुछ मैं कर दूंगा।

(भजन और बीरू नया फर्श बिछाते हैं। फर्श आकर्षक रङ्गों वाला है। उस पर भिन्न भिन्न रङ्गों और कारीगरी वाले चार कालीन कोनों पर और एक बीच में बिछाया जाता है। यह नरसिंह के इशारे पर होता है। इसके उपरान्त सौफा-सैट, कुर्सियां और छोटी-छोटी मेजें जो भीतर से लाई गई हैं, लगा दी जाती हैं। बीच में छोटे पावों वाले एक सुन्दर तख्त पर मोटा रंगीन आवरा डाला जाता है और उस पर प्लास्टिक का बेलबूटेदार रङ्गीन चादरा। नरसिंह इस बीच में भीतर जाता है और लक्ष्मी जी तथा गणेश जी के चित्रों के साथ ही पांच चित्र फिल्मी तारकों और तारिकाओं के ले आता है। उन्हें मेज पर फैलाकर जाँचता है। फिर सामने की दीवाल पर इस तरह टांगता है कि सबसे ऊपर एक

तारक और तारिका के चित्र, उनके नीचे एक ही पांत में लक्ष्मी जी और गणेश जी के तथा बाकी तारक तारिकाओं के। इस क्रम को देखकर वह हँसता है। भजन और वीरू ग्लानि की निगाहें बदलते हैं। वह उस समय भीतर की ओर झांक रहा है मानो यह देखता हो कि आ तो नहीं रहा है। तारक तारिका के चित्र ऊपर से उतार कर उनके स्थान पर लक्ष्मी जी और गणेश जी के चित्र टांग देता है और उन उतारे हुये चित्रों को नीचे की पांत में लगा देता है। भीतर चहल-पहल बढ़ रही है। इन्द्रानी आती है। कमरा सज चुका है)

इन्द्रानी—(चारों ओर दृष्टि डालकर) अब लगभग सब ठीक है। भजन तुम भीतर जाकर काम देखो। वीरू चाय पीने के लिये आना।

(दोनों जाते हैं)

नरसिंह—(हँसते हुये) पहले भी ऐसा ही था, केवल.....

इन्द्रानी—ऐसा नहीं था। ये चित्र नहीं थे यह फर्स नहीं था।

नरसिंह—अच्छा अच्छा ममी, अब तो सब ठीक है। नये फर्श के आ जाने से ही रङ्गत बदल गई है और इन चित्रों ने तो चार चांद ही लगा दिये हैं।

इन्द्रानी—अब तुम अपने बाल ठीक करके आओ। यहाँ जो कुछ कसर रह गई है उसे मैं ठीक कर दूंगी।

नरसिंह—(हँसकर) यानी फिर सब का सब उलटो–पलटोगी!

इन्द्रानी—क्योंरे! नहीं मानेगा?

(नरसिंह जाता है)

(इन्द्रानी दो कुर्सियों को इधर उधर करके एक सोफे पर बैठ जाती है। विविध भंगिमाओं से अपने भीतर की निराशा, ईर्षा और किसी निश्चय पर पहुंचने के विचार को व्यक्त करती है। फिल्म तारिकाओं के चित्रों के पास जाकर लालचभरी दृष्टि से उनकी सजावट को देखती है और

अपने वस्त्रों को तदनुकुल करने का थोड़ा प्रयास करती है। फिर झटका सा खाकर हट आती है। उसके मुँह से साहस निकल जाता है— 'यह फर्स तक मांगे का है! हाय, सब के पास सब कुछ है, पर हमारे पास कुछ नहीं!!' फिर वह यकायक खड़ी होकर फिल्मी तारिकाओं की वेशभूषा को देखकर कहती है—'क्या साड़ी है! कैसा बढ़िया ब्लाउज पहिने है! हाय !!···'

(चांदीलाल आता है। आयु इसकी लगभग चालीस वर्ष की है। मालूम पड़ता है जैसे पचास का हो। लगता है जैसे पहले काफी हँसता रहा होगा, पर अब कम हँस पाता है। कपड़े साफ सुथरे पहिने है, पर वे मूल्यवान नहीं हैं। उसके आते ही इन्द्रानी के चेहरे पर रुआंसापन सा उभर आता है। चांदीलाल कमरे की सजावट पर आंखें घुमाता है)

इन्द्रानी—बहुत देर लगा दी!

चांदीलाल—(उन चित्रों को देखते हुये) कुछ ऐसी देर तो नहीं हुई है, उधर आंगन में लड़कियों की चिल्लपों तो बहुत है, पर स्त्रियां अभी नहीं आई हैं। (उसकी ओर कुछ आंख गड़ा कर देखता है। फीके चेहरे पर हलकी सी मुस्कान बिखेरते हुये) ठाठ तो बढ़िया है आज!

इन्द्रानी—(साड़ी का पल्ला झुलाते हुये) ये ठाठ है। खाक है ठाठ!! इन स्त्रियों को देखा कैसी कैसी आबदार साड़ियां पहिने हैं! एक मैं कि मेरी साड़ी पर मक्खी भी नाक–भों सिकोड़ लेगी।

चांदीलाल—(और भी मुस्कराकर) ऐसी साड़ी के क्या कहने! तो अब मक्खियों, मच्छरों के भगाने के लिये डी. डी. टी. या फिनायल की जरूरत नहीं पड़ेगी। साड़ी ही काफी रहेगी मक्खियों को घर भर से निकाल बाहर करने के लिये।

इन्द्रानी—(और भी कुढ़कर) आज का ही दिन मिला तुम्हें मुझे सताने के लिये! हे राम!!

चांदीलाल—अच्छा अच्छा।' नाराज मत होओ। आज कुछ रुपये मिल गये हैं, तुम्हारे लिये एक अच्छी साड़ी मँगवाये देता हूं।

इन्द्रानी—(कुढ़न चली गई है, परन्तु वह प्रकट नहीं होने देना चाहती) हुं !

चांदीलाल—हुं नहीं, यह देखो। (जेब से नोट निकालता है) भाग्य से मिल गये।

इन्द्रानी—(दूसरी ओर मुंह डाले हुये) कितने हैं ?

चांदीलाल—(अब वह मुस्करा नहीं रहा है) तुम्हें क्या करना है ? आम खाने से काम या पेड़ों के गिनने से ?

इन्द्रानी—(उसकी ओर जरासा फिर कर मुस्कान के साथ) मैंने बजाज को यहीं बुलवाया है, बाजार से मंगवानी नहीं पड़ेगी।

चांदीलाल—और मेरी गाँठ में आज रुपये न होते तो क्या होता ? तनख्वाह मिलने की तारीख अभी नहीं आई। (नोट जेब में रख लेता है)

इन्द्रानी—(चांदीलाल के सामने मुँह करके कुछ तीखेपन के साथ) तो मैं बजाज को लौटा देती—

चांदीलाल – या मैं कहीं से कर्ज निकालता।

इन्द्रानी—भगवान जब देते हैं छप्पर फाड़ कर देते हैं।

(भजन आता है)

भजन—बजाज आ गया है माँ जी।

इन्द्रानी—(चांदीलाल की आँखों से आँखें मिलाती हुई) भेजदो उसे।

(भजन आता है)

चांदीलाल—(चित्रों की ओर देखते हुये) सपूत ने इन फिल्मी एक्टरों के साथ लक्ष्मी जो और गणेश जी को खूब बिठलाया है।

इन्द्रानी—बुरा लगता हो तो हटादो। लक्ष्मी जी और गणेश जी के चित्र उन सब के ऊपर हैं पूजा के लिये; और बाकी चित्र हैं कमरे की सजावट के लिये। बिना चित्रों के बैठक कितनी भद्दी और सूनी लगती।

(बजाज के साथ नरसिंह आता है। बजाज एक कन्धे पर भारी गठरी लादे है। नरसिंह बुशशर्ट पहिने हुये है। उसने अपने बाल संवार लिये हैं। चांदीलाल की दशा ऐसी हो जाती है जैसे उसने अपने को किसी भी परिस्थिति के हवाले कर देने की तैयारी कर ली हो। बजाज इन्द्रानी के सामने गठरी रख देता है)

बजाज—माता जी, सब सामान ले आया हूं। देख लीजिये। (इन्द्रानी हामी का जरा-सा सिर हिलाती है। बजाज गठरी खोलकर कपड़े दिखलाने लगता है)

बजाज—(थोड़ा-सा खोलकर दिखलाते हुये) यह जार्जेट है माता जी। चालीस पैंतालीस रुपये तक की है, लेकिन सन् पैंतालीस से इसका चलन आप सरीखे बड़े लोगों में नहीं रहा। इसे तो मजूरनियाँ पहिनने लगी हैं। (एक ओर रख देता है) यह टैबी काश्मीरी सिल्क है। चालीस रुपये तक की। आपके लायक नहीं। (रख देता है) ये रेशमी बनारसी है। पक्की जरतारी की—सोने चाँदी के तारों से बुनी। घटिया, कुछ नकली-सी; चालीस की, बढ़िया एक हजार तक की।

(इन्द्रानी हाथ में ले लेती है और निराशा भरी आँखों देखती है)

चांदीलाल—और जब यह साल छः महीने में पुरानी पड़ जाय और इसे दियासलाई के हवाले कर दें तो कितना सोना चांदी निकलेगा ?

बजाज—अरे बाबू जी बरसों चलने वाली साड़ी है, फिर रोज-रोज हर समय तो पहिनी नहीं जाती।

इन्द्रानी—(सांस भर के) इसे रख लो। दूसरी दिखलाओ। (एक ओर हाथ के पन्जे इस तरह फैलाती सिकोड़ती हैं मानों कह रही हो—

हाय ! सबके पास सब कुछ है, हमारे पास कुछ नहीं !!)चांदीलाल ओठ सिकोड़ता है और मुट्ठियां कसता खोलता है)

बजाज––(उसी प्रकार खोलता दिखलाता हुआ) यह टिशू बनारसी है। खास लंका से फैशन चला। एक तार रेशम का है, दूसरा सूत का तीसरा जरतारी का, फिर भी केवल अस्सी रुपये की ! यह देखिये इन्द्र-धनुषी रङ्ग ! फिल्म की बड़ी बड़ी एक्ट्रैसें तक पसन्द करती हैं इसे। (इन्द्रानी और नरसिंह की दृष्टि यकायक फिल्मी तारक तारिकाओं के चित्रों पर जा पड़ती है। वहां कोई भी वैसे कपड़े नहीं पहिने हैं। तारिकायें जैसे पहिने हैं, रङ्ग-बिरंगे वेलबूटेदार हैं। बजाज इन्द्रानी की निगाह परख लेता है) यह औरंगाबादी सिल्क की है, सौ सवा सौ की। काम बनारसी है। (इन्द्रानी के मन की बात भांपकर) ये चन्देरी की है, सौ सवा सौ की। भारत के बाहर तक जाती है, पर शायद आप पसन्द न करें। यह लीजिये शैफोन। फ्रांस की ईजाद। पंचानवे की, बस। और क्या कमाल का रंग ! कैसे वेलबूटे !! (फिल्मी परियों पर आंख घुमाकर) आपको बहुत फबेगी यह ! (इन्द्रानी हाथ में लेती है)

चांदीलाल––शैफोन क्या जी ?

बजाज—(हंसता हुआ) माता जी जानती हैं। लहँगा साड़ी भी कहते हैं इसे।

चांदीलाल—और नीचे जो कपड़े रक्खे हैं वे क्या और कितनी कीमत के हैं ?

बजाज—सरकार, वे सब नकली हैं, दस रुपये तक के !

इन्द्रानी—(नाक भौं सिकोड़ कर) उन्हें अब कूड़ा झाड़ने वाली पहिनने लगी हैं।

चांदीलाल—(बेबसी के साथ) हूं···!

नरसिंह – और नीचे वह क्या रक्खे हो ?

बजाज—(दिखलाता हुआ) यह खनपीस है। महाराष्ट्र में इसका बहुत रिवाज है।

नरसिंह—देखें—

चांदीलाल—(ऐसे जहां भीतर की कड़वाहट व्यंग की मुस्कानों में व्यक्त होती है) यह औरतों के बिलाउज का कपड़ा है। (इन्द्रानी हंस पड़ती है। नरसिंह झेंप जाता है)

इन्द्रानी—मैं लूंगी दो।

(बजाज दो खनपीस निकाल कर रख देता है)

बजाज—वह लहँगा साड़ी पसन्द आई न माता जी ?

इन्द्रानी—(चांदीलाल की ओर देखती हुई) हां सोच रही हूं।

बजाज—(झटपट) और इन (नरसिंह की ओर देखकर) भैया के लिये गैवरडीन, केप सिल्क, लेडी मिल्टन वाला केप सिल्क ! डी. सी. एम. फैबरिक्स !! कभी सिलवटें न पड़ें जिसमें। सस्ता है।

नरसिंह—डैडी मेरे पास यह बुशशर्ट तो है। एकाध और भी है जो पुरानी पड़ गई है। आज मेरा जन्म दिन है—एक एक टीशर्ट, बुशशर्ट, ग्लैडनैक, स्पोर्टशर्ट भी बनवा दीजिये इसमें से।

इन्द्रानी—(हाथ में लिये लहँगा साड़ी पर ललचीली दृष्टि डालती हुई चांदीलाल से) हां हां एक एक ही सही—

बजाज—कपड़ा बहुत सस्ता-सा ही है सरकार।

चांदीलाल—अच्छा भाई, यह भी सही।

इन्द्रानी—तो मैं ये दो साड़ियां ले लूं ? दोनों अलग-अलग किस्म और रङ्ग की हैं। दो भिन्न-भिन्न अवसरों पर काम दे सकती हैं। एक रेशमी बनारसी पांच सौ की और एक यह सस्ती।

चांदीलाल—(कोई चारा न देखकर) अच्छा। कुल कितने दाम हुये भई ?

(बजाज बेचे हुये कपड़ों के सिरों को देखकर एक पर्चे पर पैंसिल से हिसाब लगाता है जैसे किसी महत्वपूर्ण समस्या के हल करने में लगा हो। इन्द्रानी खरीदे हुये कपड़ों को समेटकर एक ओर रखती है। नरसिंह मेजपोशों पर रूमाल फेरता है जैसे उन पर इतनी थोड़ी देर में धूल जम गई हो ! चाँदीलाल सिर खुजलाता हुआ टहलता है। भजन कमरे के किवाड़ के पीछे से झांक रहा है जैसे किसी आदेश की प्रतीक्षा में हो। भीतर शोर गुल हो रहा है)

बजाज—सरकार कुल पर्चा सात सौ रुपये चौदह आने नौ पाई का हुआ। (जैसे बड़ी रियायत कर रहा हो) इसी में सैल्सटैक्स भी शामिल है।

चाँदीलाल—अभी तो इतना रुपया मेरे पास नहीं है।

बजाज—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं बाबू जी। (कुछ अधिक नम्रता के साथ) थोड़ा-सा अभी मिल जाता तो बड़ी कृपा होती। हमारे दूकान मालिक ने कहा था कि—

चाँदीलाल—पहले के भी बिल बिना चुके पड़े हैं। आज तो भई खर्च ही खर्च का दिन है। धीरे-धीरे उनका सब रुपया अदा हो जायगा। कह देना अपने मालिक से घबरायें नहीं—

(गठरी बाँधने लगता है)

चांदीलाल—कह तो दिया अभी बिलकुल नहीं। भजन तुम इनकी गठरी लिवा ले जाओ। बिचारे थक गये होंगे।

बजाज—(मुस्कराकर) मेरा तो काम ही बाबू जी लदे-लदे फिरने का है। (गठरी उठाता है। भजन उसके हाथ से ले लेता है। 'राम राम' करके भजन के साथ जाता है)

नरसिंह—मुझे मेरे कपड़े दे दो तो दर्जी के यहां डाल आऊँ।

इन्द्रानी—(उसके हाथ में कपड़े देकर) जल्दी आ जइयो भला। तुम्हारी बरस गाँठ का मुहूर्त आ ही रहा है।

नरसिंह—(लापरवाही से) अभी आता हूँ ममी। (कपड़े ले कर जाता है। इन्द्रानी साड़ियाँ और खन सँभालकर एक एक मेज पर रख देती है। चाँदीलाल किसी चिन्ता में डूबा-सा टहल रहा है। इन्द्रानी उसके निकट आकर सम्मुख होती है।)

इन्द्रानी—बजाज को कुछ दे देते तो बोझ हल्का हो जाता।

चाँदीलाल—पर इधर का जो बढ़ जाता। अभी केक आनी है। प्रीतिभोज की सामग्री जुटानी है, और न जाने क्या क्या? इन सब चीजों का दाम तो नकद ही चुकाना पड़ेगा।

इन्द्रानी—(चाँदीलाल को प्रसन्न करने के लिये) ठीक कहते हो, ठीक कहते हो। और हाँ मुझे एक याद आ गई। (निहोरे, मृदुत्व और कटाक्ष—कौशल के साथ) तुम्हारे इस प्यारे पुत्र का जन्म दिन है। मेरे पहिनने के लिये सोने का एक गहना तो आना ही चाहिये।

(चाँदीलाल का हाथ यकायक जेब पर जाकर फिसल जाता है)

चाँदीलाल—हाँ यह एक बात काम की कही तुमने। सोने-चाँदी के गहने का दाम आधा तो किसी समय भी खड़ा किया जा सकता है, पर इन सात सौ रुपये चौदह आना नौ पाई के कपड़ों से तो विपद की घड़ी में चौदह आने नौ पाई भी हाथ नहीं लगेंगे।

इन्द्रानी—(और भी मधुरता के साथ) आज के ऐसे शुभ अवसर पर यह क्या कहे जा रहे हो! भगवान देंगे, छप्पर फाड़ कर देंगे।

चांदीलाल—(बेबसी, उस खुशामद, भविष्य के भ्रमपूर्ण मूल्यांकन और उस घड़ी के उत्साह की मिश्रित प्रेरणा से—भीतर के शोरगुल में लड़कियों के गाने की भी आवाज उलझ गई है) हा—हाँ छप्पर फाड़कर दें या आकाश पाताल फाड़ कर दें, देंगे वही। आज भी उन्होंने दिलवाये है—एक ठेकेदार की मार्फत!

इन्द्रानी—(बड़ी ही मृदुलता के साथ) उन रुपयों से कुछ और सामग्री आ जायगी और मेरे लिये कम से कम एक गहना सोने का।

चांदीलाल—(मानो इन्द्रानी के उस माधुर्य से बिलकुल ढल गया हो, परन्तु असल में 'होनहार होतव्यता' का कायल होने के कारण) अच्छा, करता हूं प्रबन्ध। हरनारायण कहां होंगे इस समय ?

इन्द्रानी—उसकी मार्फत मँगवाओगे। उस बक्की झक्की, ऊलजलूल बेतुके की मार्फत ! जिसको न जाने कैसे हरनारायण का नाम मिल गया !!

(हरनारायण एक बड़ी केक दोनों हाथों में साधे यकायक आता है। वह आयु में चांदीलाल से थोड़ा ही कम है, परन्तु बहुत स्वस्थ है। कपड़े खादी के सीधे सादे साफ पहिने है। हँसमुख है। बहुत कंजूस, सदा सस्तेपन पर निगाह डालने वाला। परन्तु चाँदीलाल का शुभचिन्तक है। रेलवे में उसका कभी कभी काम पड़ता है जहां के एक दफ्तर का चांदीलाल कोई महत्वपूर्ण 'बाबू' है। इन दोनों के सम्बन्ध घनिष्ट हैं। इन्द्रानी उसे देखते ही बरबस मुस्कराहट बिखेर देती है जैसे उसका कोई भीतरी विकार घुल गया हो)

हरनारायण—(आते ही) जैसे आपको श्री इन्द्रदेव की महारानी का नाम मिला। बस, वैसे ही मुझे हरनारायण का नाम मिला ! (इन्द्रानी हँस पड़ती है। चांदीलाल भी खिल जाता है)

(भारी भरकम केक तख्त के बीचोंबीच रख देता है। फिर जेब से मोमबत्तियों का पैकट निकालता है]

हरनारायण—इन मोमबत्तियों के खाने चबाने वाले भी होंगे कोई या नहीं ?

इन्द्रानी—तुम इतना न बको तो क्या काम न चले ?

हरनारायण—मेरे इतने बकने झकने पर भी यह सब स्वांग लड़के या लड़की का जन्म दिवस मनाने की प्रथा संसार भर में होगी, परन्तु

अपने देश में यह केक ! केक कहें या रोटों का नगड़दादा !! यह रोटा है या—

चांदीलाल—बड़ी रोटी कहो यार बड़ी रोटी—

हरनारायण—(केक पर मोमबत्तियां जमाते हुये और केक के नीचे एक चाकु रखते हुये) बड़ी रोटी नहीं, रोटे रोटियों का जमादार—(इन्द्रानी हँसती है। चांदीलाल के चेहरे का फीकापन पहले ही दूर हो गया था, अब उस पर हँसी फैल जाती है) या आटा, मक्खन, बादाम, पिस्तों, शकर वगैरह खुराफात का फूला हुआ चबूतरा—बाहर से भरा, भीतर भीतर पोला। यह जमाना भी कुछ ऐसा ही है।

इन्द्रानी—ये सब चीजें जो तुमने गिनाई वे खुराफात तो नहीं हैं। खाने की सामग्री जिसमें मेवे भरे हैं वह खुराफात !

हरनारायण—(मोमबत्तियाँ खोस चुका है) खुराफात न सही, बेहूदगी तो है, बेहूदगी ! रुपये पैसे की बर्बादी भाभी जी ! विलायत की नकल। जैसी बन्दर की नकल समुन्दर करे !

इन्द्रानी—हिश !

चांदीलाल—(हँसकर। वह मन ही मन हरनारायण की बात पर प्रसन्न है) तुम सचमुच बेहूदे हो।

हरनारायण—जी जरूर। (चारों ओर सामान और सजावट पर आंख पसारते हुये) और हुकुम ?

(भीतर से पुकार—इन्द्रानी ! इन्द्रानी !!)

इन्द्रानी—आई। (भीतर शोर होता है जिसमें बच्चों के स्वर अधिक हैं। उस शोर के कारण इन्द्रानी कानों पर हाथ धर लेती है। कुछ क्षण बाद शोर कम हो जाता है) पुजारिन बुढ़िया बुला रही है। लड़के की मां को दो दस्तूर करने पड़ते हैं, नहीं तीन। कुछ होम हवन भी ; एक कर आई, दूसरा जाके करे देती हूँ, तीसरा यहीं करना पड़ेगा।

चाँदीलाल—तो जाओ न (हरनारायण जुड़े हाथ झुलाकर जाने का समर्थन करता है। इन्द्रानी बुरा नहीं मानती। हँस देती है।)

इन्द्रानी—तुम बड़े वाहियात हो हरनारायण, (जाते जाते लौट पड़ती है) वह गहना आ जाना चाहिये। तीसरी रसम की अदायगी के समय सोने का कोई नया गहना मेरे हाथ या गले में अवश्य होना चाहिये। छोटा-सा ही हो, पर हो सोने का।

हरनारायण—कमर में करधोनी क्यों न हो पूरे सेर भर की ?

इन्द्रानी—कहाँ रक्खी है ! (उदासी के साथ कहकर फिर मुस्कान के साथ चांदीलाल से) मोतियों की एक माला भी होनी चाहिये, चाहे हो नकली मोतियों की। (चांदीलाल सिर खुजलाने लगता है)

हरनारायण—जाइये श्रीमतीजी भीतर। मोतियों की माला में बहुत दाम नहीं लगेंगे। (इन्द्रानी जाती है। उसके चले जाने के उपरान्त) अब किस गुन्ताड़े में हो ?

चांदीलाल—इतना पैसा तो हरनारायण गाँठ में है नहीं कि सोने का जेवर और मोतियों की माला मँगवा सकूं। सात सौ रुपये के कपड़े तो अभी उधार लिये हैं।

हरनारायण—आप तो बिलकुल उल्लू किस्म के आदमी हैं।

चांदीलाल—यों ही बकते रहते हो।

हरनारायण—इधर सुनो।

(दोनों कमरे के ऐसे कोने पर जा खड़े होते हैं जहां से उन्हें विश्वास है कि कोई तीसरा उनकी बात न सुन सकेगा)

चांदीलाल—कहो भी, तुम्हारी सभी बातें विलक्षण होती हैं।

हरनारायण – लेकिन किसी को हानि नहीं पहुंचातीं। और निकट आकर सुनो।

(चांदीलाल उसके बहुत निकट पहुंच जाता है)

हरनारायण—वह··· (खुसफुस में)··· (अपने ओठों पर उङ्गली रख कर)··· हाँ बिलकुल—

चांदीलाल—(अविश्वास की मुद्रा में) क्या (सचमुच··· खुसफुस में) बिलकुल विचित्र··· बिलकुल·· विचित्र मैं नहीं जानता था···

हरनारायण—आप हैं गधे···· बिलकुल उल्लू किस्म के···· (ओठों पर उङ्गली रखकर सावधान करते हुये) और पास आओ। (चांदीलाल उसके ओठों के पास अपने कान कर देता है । हरनारायण उसके कान में कुछ कहता है। चांदीलाल नहीं का सिर हिलाता है और हरनारायण के कान में खुसफुस करता है। हरनारायण कुछ जोर से बोलता है) आपने उस ठेकेदार से रिश्वत में जब दो सौ रुपये लिये धरम-ईमान किस दुनियां में चला गया था ?

चांदीलाल—चुप ! चुप !! (कुछ सोचने लगता है)

हरनारायण—मान जाओ। सुनो। (चांदीलाल के कान में फिर खुसफुस करता है। अब की बार चांदीलाल की भंगिमा से जान पड़ता है कि हरनारायण की बात को मान गया है)

चांदीलाल—बड़े अजीब नुस्खे हैं जी तुम्हारे पास ! बड़ी दूर की कौड़ी लाते हो !!

हरनारायण—आपकी गांठ में यह एक मकान ही तो है जिसकी बस यह बैठक ही सब कुछ है। और कर्जा ! फैशन बाहर वालों से उधार ली, रुपया साहूकारों से !

चांदीलाल—कोई नुस्खा इस बोझ के उतारने का भी बतलाओ। ढाई सौ रुपये महीने की तनख्वाह में न तो गुजर हो सकती है और न कर्जे का बोझ ही। खैर, देखा जायगा।

हरनारायण—और आज हजार आठ सौ का कपड़ा ले डाला श्रीमान ने !

चांदीलाल—नहीं, उतने का तो नहीं। केवल सात सौ रुपये चौदह आने नौ पाई का—

हरनारायण—केवल !

(भीतर शोर होता है। बगल के दरवाजे पर किसी के आने की आहट होती है)

चांदीलाल—(उस दिशा में देखता हुआ) तो तुम जाओ। (जरा ऊँचे स्वर में) देखो माल बढ़िया रहे। जल्दी लौटना।

(इन्द्रानी आती है)

हरनारायण—हां हां जरूर। (जाता है)

इन्द्रानी—दर्जी के यहां कपड़े डाल कर नरसिंह आ गया है। लड़कियां और स्त्रियां सब आ चुकी हैं ! कुछ रीतियां कर ली गई हैं; एक दस्तूर बाकी है जो गहना वहना आ जाने के बाद यहीं होगा। आगे पीछे गाना और छोटी लड़कियों का नृत्य इत्यादि होगा। हरनारायण तो जल्दी आ जायेंगे न ?

चांदीलाल—देर तो नहीं लगना चाहिये। तैयार माल ले आयेंगे। दूकान दूर नहीं हैं।

इन्द्रानी—तो मैं इन सब को बुलाये लेती हूं। तुमने अपने मित्रों में से जिनको बुलाया हो, बाहर जाकर उनकी अगवानी कर लो।

चांदीलाल—मैंने किसी को नही बुलाया है—हां नन्हें सेठ को बुलाया है; वह अपना साहूकार है, और, दूसरा हरनारायण है। मैं बाहर जाकर देखता हूँ। बढ़ई और उनके बीरू से भी कह दिया था। पड़ोसी हैं, अपने काम आते रहते हैं।

इन्द्रानी—चलो ठीक है। हरनारायण के लिये जरा जल्दी करना।

(चांदीलाल बाहर के दरवाजे से जाता है। इन्द्रानी भीतर वाले द्वार पर खड़ी होकर आंगन से आमन्त्रितों को बुलाती है जिनमें दो

Acc. No. 39876
Date 21. 6. 72

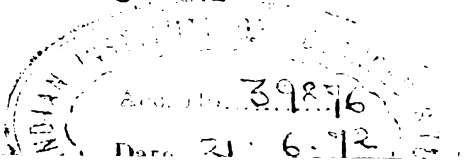

स्त्रियां हैं, शेष सब लड़कियां। कएस्त्री बहुत सजीले वेश में है गहने। बड़े चमक-दमकदार—मूल्य उनका जो कुछ भी हो, कौन जाने ? कपड़े बिलकुल आज दोपहर तक की फैशन के—यह उनकी और आपकी कल्पना की उड़ान पर निर्भर है। बहुत ही कीमती होंगे यह कोई भी कह सकता है। सब मिलाकर उनके रंग और ढग चकाचौंध लगाने वाले। दूसरी स्त्री के गहने चमक-दमकदार तो नहीं हैं किन्तु थोड़े होते हुये भी ठोस से लगते हैं ! कपड़े तड़क-भड़क वाले पहिने है। घटिया प्रकार के हैं आकर्षक। बहुमूल्य अलङ्कारों और वस्त्रों वाली के चेहरे पर कुछ सुन्दरता तो है ही, रूज, पाउडर, लिपस्टिक केश सज्जा में फिल्मी तारिका को मात देने पर तुली जान पड़ती है। दूसरी स्त्री के चेहरे और देह के पीछे अनवरत परिश्रम की झांकी वर्तमान है। पहली के पीछे और सब ओर कोमलता, मार्दव और झांई मारने वाली थकान है। पहली के सिर पर रंग-बिरंगे फूलों की सजावट है जो केशों के चमचमाते तेल या किसी ऐसे द्रव को अपना वर्ण सा बना रहा है। किसी बड़े अफसर की पत्नी है। नाम पिंगला है। दूसरे के सिर पर वही घटिया प्रकार की ओढ़नी है। यह बढ़ई की पत्नी, बीरू की मां है। लड़कियां सजीले वेश में जैसे सङ्ग मरमर की हँसती-खेलती मूर्तियों को रङ्ग-बिरङ्गा कर दिया गया हो। नरसिंह को दूल्हा जैसा सिंगारा गया है—सिर पर फूलों की मालायें लपेटे हैं। बाकी वही बढ़िया बुशशर्ट और बिना शिकन वाली पतलून। चेहरा उसका हर्षमग्न है जैसे दिग्विजय करके आया हो। नरसिंह केक (रोट) वाले तख्त के निकटवर्ती सोफे पर आ जमता है।। उस बहुत सजीली महिला को इन्द्रानी एक दूसरे सोफे पर बिठला देती है)

इन्द्रानी—(दूसरी स्त्री से) बीरू की मां, तुम इस कुर्सी पर बैठ जाओ।

बीरू की मां—नहीं जी, हम लोग कुर्सियां बनाते तो हैं, पर उन पर बैठते नहीं हैं। (हँसकर) उन पर तो आप लोग ऊबती हैं। मैं तो

नीचे ही बैठूंगी। (निषेध करने पर भी धम्म से फर्श पर बैठ जाती है। इन्द्रानी हँसने लगती है। लड़कियाँ पहले तो ठिठकती हैं, फिर मनचाही जगहों को घेर लेती हैं। पिंगला ओठों की सिकुड़न से बीरू की माँ के प्रति उपेक्षा और ग्लानि व्यक्त करती है)

नरसिंह—अब मैं इन मोमबत्तियों को उजाल दूं, ममी ?

इन्द्रानी—अरे नहीं बेटा नरसिंह। अपने डैडी को आ जाने दे। भजना रे ! ओरे भजना !! (भीतर से) जी, आया जी। (दौड़ता हुआ आता है। अब यह भी साफ-सुथरी हाफपैंट और अद्धा कमीज पहिने है। बाल भी ठीकठाक कर लिये हैं)

इन्द्रानी—अरे, वह छीतरी तो लेआ जिसमें नरसिंह अपना दायाँ पैर रक्खेगा। (मुस्कराकर उन सब की ओर आँखें घुमाते हुये) हमारे यहां रिवाज है।

(भजन दौड़कर जाता है और बांस की खपचों की बनी गहरी टोकनी उठा लाता है जिस पर रङ्ग-बिरङ्गी चमकदार पन्नियां चिपकाई गई हैं। वह इस 'छीतरी' को इन्द्रानी के हाथ में दे देता है। इन्द्रानी छीतरी को रोट वाले तख्त के सामने रख देती है। बालिकायें भी उत्सुक होती हैं। कुछ हड़बड़ होती है)

इन्द्रानी—इस छीतरी को अभी कोई न छुये। अपनी-अपनी जगह जाओ। पहले एक गीत गाया जायगा। फिर छीतरी की रसम अदा होगी। उसके बाद (लड़कियों से) तुम्हारा नृत्य होगा। गाना होने दो; मैं तब तक एक काम करके आती हूँ। (इन्द्रानी बाहरी दरवाजे तक जाकर झाँकती है कि हरनारायण आ गया है या नहीं। अभीष्ट न पाकर भीतरी द्वार से घर के आँगन की ओर झाँककर लौट पड़ती है)

इन्द्रानी—पिंगला जी आप एक गीत गा दें। बड़ी कृपा होगी। अवसर अच्छा है। आप गाती बहुत अच्छा हैं। आपकी तानें इन सब के

शोरगुल को गुल कर देंगी। (अपनी ही बात पर हंसती हुई भीतर जाती है। पिंगला गाती है)

(गीत की समाप्ति पर भीतरी द्वार से इन्द्रानी आती है। उस बढ़िया साड़ी को पहने है जो उसके लिये कुछ समय पहले ली गई थी। गले में सोने का हार डाले है जो उसने अभी-अभी पहिना है। मोतियों की माला उस हार के नीचे है मानो सोने के हार की वन्दना कर रही हो। नीची निगाहों अपनी चमक दमक को निरखकर इधर उधर देखती है कि किस पर कितना रोब पड़ा है। बालिकायें उसे ऐसे देख रही हैं जैसे वह कोई गुड़िया हो। बीरू की मां देखकर तारकाओं के चित्रों पर आंख जमाती है। पिंगला पर जैसे कोई प्रभाव ही न पड़ा हो। इन्द्रानी अपने को पराजित नहीं समझती। पिंगला के पास जाकर बैठ जाती है। नरसिंह दूर नहीं है। वह मुंह फेरकर दूसरी ओर देखने लगता है)

इन्द्रानी—बहिन जी, अपनी हैसियत से ही संसार में चलना पड़ता है। (अपनी अभिव्यंजना से वह इसका बिलकुल उल्टा अर्थ पिंगला के मन पर बिठलाना चाहती है—अर्थात् हमारे आर्थिक साधन तुम्हारे आर्थिक साधनों से कम होते हुये भी हम जो कुछ पहिन कर आये हैं उसकी सज्जा तुम्हारी सज्जा की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ी चढ़ी है! पिंगला उसके हार को एक क्षण बारीकी के साथ परखकर मुस्कराती है। और 'हां आं' कहती है। इन्द्रानी इस 'हां आं को बिलकुल अपर्याप्त समझती है) इसीलिये हमने बहुत कम लोगों को बुलाया है, यानि अपने ही अपने थोड़े से प्रियजन बुलाये हैं। (एक क्षण सोचती है मानो गुन रही हो कि यह बात अपनी हैसियत की चूल में ठीक नहीं बैठी) और लोगों को भी बुलाया है जो अपने अपने समय पर धीरे धीरे आते जाते रहेंगे। इस मुहूर्त के लिये तो इतने ही—

पिंगला—हाँ जी, बैठक में इतनी गुञ्जाइश भी तो नहीं है। (इद्रानी को धक्का सा लगता है। उसी समय बाहर के द्वार से आगे आगे चांदीलाल, पीछे पीछे नन्हें सेठ और हरनारायण आते हैं। हरनारायण के हाथ में केले के पत्ते में रक्खी हुई फूलमालायें हैं। इन सब के पीछे बीरू और उसका पिता चिमनलाल आते हैं। नन्हें सेठ, सेठ की किसी भी पुरानी परिभाषा में ठिकाने से नहीं बैठता। छरेरा शरीर, मझोले से कुछ ऊँचा कद, ओठों पर मुस्कान, आंखों में अभेद्य सिधाई.—जो कभी कभी ओठ की सिकुड़न के साथ तीखी भी पड़ सकती है,—सादा स्वच्छ धोती, कुर्ता, दुपट्टा और कंघी किये तिलचांवरी बाल। दाढ़ी मूंछ साफ। चेहरे की रेखाओं से आयु लगभग चालीस बयालीस की मान ली जावे। वैसे चाल में ढीलापन जरा भी नहीं है। बीरू चौखानी सूती अद्धी कमीज और खाकी हाफ पैंट पहिने है। तेल दिये बाल सफाई से कढ़े हैं। उसका पिता चिमनलाल कठोर परिश्रमी बढ़ई है। पुराना कुर्ता, मैली धोती और छेदों वाले रंगीन बुंदकियोंदार साफे पर चिपके काठ फाड़ते चीरते समय के चित्तों से उसका व्यवसाय कुछ तो प्रकट होता ही है। कम से कम परिश्रमी कार्यकर्ता वह अवश्य जान पड़ता है। चांदीलाल नन्हें सेठ को एक सोफा कुर्सी पर बिठलाता हैं जो नरसिंह के निकट है। बीरू इधर उधर देखकर थोड़ा सा – थोड़ा सा ही—सहमता हुआ एक छोटी कुर्सी पर बैठ जाता है। हरनारायण केले के पत्ते की लपेट में रक्खे फूल लिये एक ओर खड़ा हो जाता है। चिमनलाल भी उसी के पास जा खड़ा हो जाता है। हरनारायण पिंगला को नमस्कार करता है।)

हरनारायण—आपने बड़ी कृपा की। साहब कहीं बाहर गये हैं ?

पिंगला—दौरे पर हैं। आइये न किसी दिन चाय पीने ! दो तीन दिन में आ जायेंगे वह।

हरनारायण—मेरा एक स्वार्थ भी है—स्वार्थ और चाय-दोनों-के लिये आऊँगा (हँसता है वह भी थोड़ा सा हँसती है हरनारायण तख्त के पास जाता है)

चांदीलाल—(केवल शिष्ठाचारवश ही नहीं, प्रयत्न इस कारण भी कि बढ़ई चिमनलाल के पास गाढ़ी कमाई का काफी पैसा है, अरे भाई चिमनलाल वह कुर्सी खाली पड़ी है वहांबैठ जाओ।

चिमनलांल—नहीं बाबूजी, मैं ऐसे ही भला।

(संकोचवश वीरू कुर्सी से थोड़ा सा उठता है)

चिमनलाल—(अपना स्वाभिमान पुत्र बीरू को प्रदान करते हुये) तुम बैठे रहो बीरू। तुम तो कवि हो !

बीरू—(कुर्सी पर जमकर) कवि तो नहीं हूं दादा। हां इधर-उधर का कुछ याद कर लिया है। (संकोच में सिकुड़-सा जाता है)

चिमनलाल—(अपनी समझदारी व्यक्त करने के लिये) बेटा एक ही बात तो है।

चांदीलाल—तो भाई उस कुर्सी पर बैठ जाओ न। (हाथ पकड़कर चिमनलाल को बिठलाता है। वह ज्यादा विरोध भी नहीं करता। एक कुर्सी पर बैठ जाता है। चांदीलाल नन्हें सेठ के पास जा बैठता है)

नन्हें सेठ—बाबूजी, आपकी तरफ यह रिवाज—रोट, रोट मोमबत्तियां वगैरह वगैरह—कब से चल पड़ा है।

चांदीलाल—पुराना नहीं है सेठ जी। कुछ बुरा भी नहीं है। (बड़प्पन प्रकट करने के लिये) अङ्गरेजों की सुहबत से आया है—बर्थ डे केक—जन्म दिवस का रोट—ऐसी और भी बहुत सी बातें आ गई हैं।

नन्हें सेठ—उनकी देखा देखी। (हँसता है)

चांदीलाल—(उसकी हां में हां मिलाने के लिये हँसते हुये) हां आं उनकी देखा देखी। देखा देखी में ही तो न जाने किसकी कितनी बातें

इधर की उधर जा बैठती हैं। वैसे भी यह रिवाज है तो कुछ सुहावना ही।

नन्हें सेठ—तो अब जो होना है शुरू करिये न।

(चाँदीलाल हरनारायण को संकेत करता है। वह उसके निकट आता है)

चाँदीलाल—उनसे पूछ तो लो कि पहले क्या होना हैं।

(हरनारायण इन्द्रानी के पास जाता है। नन्हें सेठ छीतरी को ध्यान लगाकर देखने लगता है। चाँदीलाल उसका साथ देता है)

हरनारायण—(इन्द्रानी से) पहले क्या होगा? और फिर क्या? खाने को कब मिलेगा? मुझे तो इसी से ज्यादा मतलब है।

इन्द्रानी—अरे वह तो होगा ही, पहले तुम नरसिंह के गले में एक बड़ी माला डाल दो फिर जो जैसा हो उसके गले में एक एक। बड़े बड़े अवसरों पर सब के यहाँ होता है। इसके बाद उस छीतरे में नरसिंह पैर रक्खेगा। आतिशबाजी छूटेगी। फिर लड़कियां का नृत्य होगा। अन्त में स्वल्पाहार।

हरनारायण—(नरसिंह की ओर जाते जाते) सत्यानास जाये इस नये शब्द 'स्वल्पाहार' का। हम सरीखे तो बड़े घाटे में आ गये।

(नन्हें सेठ आश्चर्य मिश्रित मुस्कान के साथ हरनारायण की ओर देखता है। चांदीलाल हँसता है। बालिकायें हँसती हैं। पिंगला लिपस्टिक रंजना में अपनी मुस्कान को सँजो लेती है। चिमनलाल की समझ में नहीं आता तो उसके भ्रूभंग में प्रश्न चिन्ह सा बन जाता है। इन्द्रानी मुश्किल से अपनी हँसी रोकपाती है। हँसी रोकने के प्रयास में वह पिंगला को अपना हार विज्ञापित करती है। पिंगला की दृष्टि में उतेक्षा है, परन्तु इन्द्रानी समझती हैं कि वह भाव पिंगला के गले नहीं उतार पाई)

हरनारायण—(नरसिंह के गले में एक बड़ी फूलमाला डालते हुये) बेटा जीते रहो, और ऐसे ही मौज के सपाटे भरते रहो। अब सोचो कि इस सामने वाली छीतरी में तुम्हारा क्या होने वाला है।

इन्द्रानी—(पिंगला से) मुंह फट तो बहुत हैं, पर दिल के बहुत अच्छे ! यह सोने का हार मेरे लिये हरनारायण ही ले आये हैं।

पिंगला—(आंख गड़ा कर देखते हुये) सोने का हार ! हां · आं

(पिंगला उत्तर नहीं दे पाती कि हरनारायण इन्द्रानी के पास द्रुतगति से आ जाता है)

हरनारायण—(केले के पत्ते की पोढ़ी में से एक हार निकाल कर) सपूत जी के बाद अब उनकी माताजी के यानी आपके गले में—('नहीं नहीं' करते भी हरनारायण इन्द्रानी के गले में हार डाल देता है। फिर वह पिंगला के गले में डालता है। उस समय इन्द्रानी फूल हार के बीच में उस स्वर्ण-हार को सम्भालती निहारती है—पिंगला को दिखलाती-निरखाती भी जाती है। पिंगला की दृष्टि में कोई कुतूहल नहीं है। वह हरनारायण को 'धन्यवाद' देकर दूसरी ओर देखने लगती है। फिर हरनारायण नन्हें सेठ, चांदीलाल इत्यादि के गले में मालायें डालता है। सब के अन्त में बीरू, उसकी मां और चिमनलाल के गले में। जब वह बीरू की मां के गले में हार डालता है तब वह संकोचवश अपना हाथ अड़ाती है, इस संकोच के साथ उसके गले में माला पड़ती है। चिमनलाल के गले में जब माला पड़ चुकती है तब वह कुर्सी पर घुटने सिकोड़ कर बैठ जाता है। अब दो तीन मालायें हरनारायण के हाथ में बची रहती हैं। वह उन्हें हाथ में लिये सबके सामने आ जाता है)

हरनारायण—(अपने गले में उन मालाओं को डालते हुये) यह रोकड़ बाकी अपने राम की भेंट !

(और तो सब कम या ज्यादा हँसते ही हैं, नन्हें सेठ सबसे अधिक हँसता है)

इन्द्रानी—(चांदीलाल के पास आकर) अब छीतरी की रसम होनी है।

चांदीलाल—कर डालो।

(इन्द्रानी नरसिंह के पास जाती है)

इन्द्रानी—बेटा इस छीतरी के भीतर पैर रक्खो।

नरसिंह—(केवल मचलने के लिये) क्यों ?

इन्द्रानी—अरे रखना पड़ता है। रीति चली आई है। जब तुम बहुत छोटे थे तब छीतरी के भीतर लिटाये जाते थे। परसाल तो पैर रक्खा था न इसमें ? भूल गये ?

नरसिंह—हाँ, याद आ गया। मेरा पैर फँस गया था उसमें, या फाँस दिया गया था। (जरा नखरे के साथ) वैसा ही तो नहीं है ? (चाहता है वह यह कि वैसा ही फिर हो ?)

इन्द्रानी—अरे बेटा डालो भी इसमें अपना दाँया पैर।

(नरसिंह छीतरी के भीतर पैर रखता है। उसमें एक फन्दा है जिसका सिरा छीतरी के बाहर है। लड़कियाँ कुतूहलवश निकट आ जाती हैं। इन्द्रानी बाहर के सिरे को खींच देती है। नरसिंह के पैर का पञ्जा छीतरी में फँस जाता है)

इन्द्रानी—केक पर लगी मोमबत्तियों को उजालो। (भजन जेब में से निकाल कर दियासलाई देता है। नरसिंह जैसे ही रोट वाले तख्त की ओर बढ़ता है दायें पैर में फँसी छीतरी भी उठती है। वह तमाशा करने के लिये छीतरी को झटकार के चलता है। नरसिंह चिढ़ने का बहाना करता है। वे सब प्रसन्न होते हैं। नरसिंह मोमबत्तियाँ जलाने लगता है)

हरनारायण—ये सब रीति रिवाज हम सबके पैरों से लेकर सिर तक इस छीतरी की तरह चिपके हुये हैं।

(नरसिंह रस्म निभाकर सोफे पर आ बैठता है। थोड़ी देर तक भिन्न भिन्न प्रकार की आतिशबाजी पर्दे के पीछे जलती रहती है। इन्द्रानी जेब से एक रुपया निकाल कर नरसिंह पर निछावर करती है और जरा दूर खड़े भजन को संकेत से अपने निकट बुलाकर उसकी ओर रुपया बढ़ाती है जैसे कोई बड़ा दान कर रही हो)

इन्द्रानी—लो, यह तुम्हारा हक दस्तूर है भजन।

(भजन रुपया ले लेता है। ऊपर से प्रसन्न वदन है। जब हरनारायण की ओर देखता है तब गम्भीर हो जाता है। अपने असन्तोष को गम्भीरता के आवरे में छिपाता है)

इन्द्रानी—(लड़कियों से) हाँ अब तुम सब अपनी कला दिखलाओ।

(लड़कियां बढ़ती हैं)

हरनारायण—बेटा नरसिंह तुम भी नाच डालो। लगोगे जैसे अफ्रिका का कोई चिपैंजी हो!

(नरसिंह क्रुद्ध दृष्टि से हरनारायण को देखता है। पिङ्गला अपनी हँसी को दबाने का प्रयास करती है। चांदीलाल की भौंहें सिकुड़ती हैं। और लोग जो नहीं समझ पाये हैं यों ही हँसते मुस्कराते हैं)

नरसिंह—चिपैंजी होंगे आप।

इन्द्रानी—क्या बकते हो? (भीतर भीतर प्रसन्न है) रहने भी दो, काम होने दो।

(गायन के साथ लड़कियों का नृत्य होता है। लड़कियाँ 'केक' वाले तख्त के चारों ओर नृत्य करती हैं। नृत्य के समय इन्द्रानी का हाथ कई बार उस नये हार और मोतियों की माला पर जाता है। एक बार जब पिङ्गला का ध्यान आकृष्ट कर लेती है, तब देखती है कि उसके चेहरे पर हँसी युक्त उपेक्षा है। इन्द्रानी क्षोभ के मारे तन जाती है। चिमनलाल पहले सराहना में झूठ-मूँठ सिर हिलाता है, फिर ऊँघने

लगता है। उसका सिर कुर्सी की एक तरफ सट जाता है। नरसिंह कोशिश करके छोतरी में से अपना पैर निकाल लेता है। हरनारायण जेब में से कागज निकाल कर पैंसिल से अपने हाथ किये खर्च का हिसाब लिखता रहता है। जब कभी किसी मद की याद नहीं आती तब नाक टटोलता है। माथे पर पैंसिल फेरता है, हाथ की उङ्गलियों पर कुछ गिनती करता है। नृत्य की समाप्ति पर जब तालियाँ बजती हैं वह कागज पैंसिल जेब में रख लेता है। चिमनलाल यकायक सीधा बैठ जाता है—गिरते गिरते सम्भलता है, और यों ही कह बैठता है) 'वाह ! वाह !! क्या बात है।'

बीरू की माँ—ऐसे औसर काज पर तो सोहरा गाया जाता है वह किसी ने भी नहीं गाया !

हरनारायण—तो तुम गा दो। इन बाजों की जगह कहीं से रमतूला नगाड़ा आ जायगा तुम्हारे गीत का साथ देने के लिये।

(कई कंठों से हँसी)

इन्द्रानी—अब चाय पानी .....

हरनारायण—यानी वह स्वल्पाहार भी नहीं ! सिर्फ चाय पानी !!

चाँदीलाल—बक बक तो तुमने बहुत करली अब करो जल्दी से प्रबन्ध। (नरसिंह से) तब तक तुम केक को काटो, बांटों और खाओ।

(नरसिंह केक के पास रक्खे चाकू से केक काटता है और उसके छोटे छोटे टुकड़े लड़कियों में बाँटता है। हरनारायण और भजन चाय पानी का आयोजन करते हैं)

चाँदीलाल—तब तक तुम्हारी एक कविता हो जाय बीरू।

चिमनलाल—बीरू को बहुत सी याद हैं। सुनाओ बेटा एकाध।

बीरू—बहुत सी कहाँ याद कर पाई हैं। काम से समय कहाँ मिल पाता है ? एक सुनाये देता हूं। मुझे वही बहुत अच्छी लगती है—

दौलत जो दीजो तो न दीजो कछु सोच फिर,
एतोवार दीजो मेरो जनम सुधारियो।
संग पर दीनन को, दीनन पै दया नित,
प्रेम में मगन ऐसे दिन जू निवारियो।
'ठाकुर' कहत जो अधीन भयो रावरे तो,
जासों जैसो नातो तासों तैसो और पारियो।
ए यो ब्रजराज तेरे पांय कर जोरे गहों;
प्रान हूं नजर पै न नियत बिगारियो।

चिमनलाल—वाह ! वाह !!

बीरू की माँ—ठीक कहा बेटा, ठीक कहा।

(नन्हें मेठ ऊपर की ओर देखता हुआ सिर हिलाता है। चाँदीलाल सिर नीचा किये सोच विचार करने लगता है। लड़कियाँ केक का टुकड़ा खाती रहती हैं। पिंगला और इन्द्रानी की समझ में जो कुछ आया हो भिन्न भिन्न प्रकार से उनकी आकृति व्यक्त यह कर रही है कि कविता अवसर के उपयुक्त नहीं रही)

हरनारायण—(चाय के प्याले इत्यादि रखते रखते) फिर से कह दो बीरू। (भीतर चला जाता है)

(बीरू फिर से कविता सुनाकर बैठ जाता है। भजन एक बड़े ट्रे (ऊँचे कोनों वाली चौकोर थाली) में खिलौने लाकर नीचे रख देता है। उसके पीछे एक बड़ी ट्रे में हरनारायण खिलौने लगाकर उसी के पास रख देता है। चाँदीलाल, इन्द्रानी ये खिलौने लड़कियों को बाँटती है। खिलौने सस्ते नहीं हैं। अच्छे हैं। लड़कियां खिलौने पाकर प्रसन्न होती हैं। चिमनलाल, बीरू और बीरू की माँ को बड़े बड़े से बढ़िया रूमाल भेंट किये जाते हैं। पिंगला तुरन्त उठकर एक रूमाल नरसिंह को भेंट करती है)

पिंगला—विलायत में रिवाज यह है कि मेहमान कोई न कोई चीज, चाहे वह थोड़े मूल्य की ही क्यों न हों, लड़के लड़की को भेंट करते हैं, जिसका जन्म-दिवस मनाया जाता है। (चिमनलाल या उसके घर का कोई कुछ भेंट नहीं करता है। यह चोट उन पर है)

हरनारायण—यदि विलायत के रिवाजों की कोई पोथी आपके पास हो तो दे दीजिये बस फिर उसी को वेद मान कर चलें। इन दिनों तो अपने यहाँ रिवाजों की खिचड़ी पक रही है जो मुझे इस स्वल्पाहार से भी ज्यादा अखरती है।

(पिंगला कुढ़ जाती है। इन्द्रानी की भी त्योरी चढ़ जाती है। चिमनलाल हँस पड़ता है। बीरू की माँ प्रसन्न है)

चांदीलाल—रहे तुम बिलकुल उल्लू ही।

हरनारायण—अजी मैं क्या मेरे सभी साथी सङ्गाती, मित्र विन्न उल्लू ही नहीं काठ के उल्लू हैं। (वे सब हँस पड़ते हैं) देखिये देवियो और देवो ! विलायती रिवाज बड़ा बढ़िया है। सोचता हूँ अगले महीने में ही अपना और चांदीलाल का जन्मदिवस मनाऊँ। बहुत लोग न्योते जावें और वे सब हम लोगों को बढ़िया चीजें नजर करें। पर आज यहाँ तो आधा तीतर आधी बटेर वाला खिचड़ी रिवाज ही चलेगा। इसलिये मैं श्रीमती पिंगलादेवी को अपनी ओर से इस शुभ अवसर के उपलक्ष में एक छोटी सी भेंट करता हूँ। (जेब से एक छोटा-सा पतला हार निकालकर जो देखने में सोने का मालूम होता है, पिंगला को भेंट करता है। वह उसे जरा-सा देखकर ही हँस पड़ती है)

पिंगला—बड़ा खर्च कर डाला श्रीमान हरनारायण जी आपने ! इतनी उदारता !!

इन्द्रानी—(उत्सुक और प्रश्न सूचक मुद्रा में) क्यों ! कितने का होगा बहिन ?

पिंगला—(हँसी थोड़ी सी ही कम हुई है) है तो भेंट, उपहार, कितने का भी हो। (हँसी रोककर) जर्मन गोल्ड है। होगा कोई दो ढाई रुपये का।

(पिंगला की आँख इन्द्रानी के उस नये हार पर जाती है। उसी क्षण इन्द्रानी का हाथ उस पर जाकर फिसल पड़ता है)

इन्द्रानी—(सहसा) हाँ आँ···यह असली···

पिंगला—मालूम तो यह भी जर्मनी गोल्ड का होता है।

इन्द्रानी—जर्मनी गोल्ड ! नहीं !!

(इन्द्रानी को बड़ा धक्का लगता है। सम्भलने के लिये माथा पकड़ती है। पहले ट्रे में रक्खे हुये खिलौने हरनारायण और भजन द्वारा लड़कियों को वितरित होते हैं। वे बहुत प्रसन्न हैं। चाँदीलाल बहुत गिरे हुये मन से इनका साथ देने के लिये उठ बैठता है। पर्दा गिरता है)

(यवनिका)

दूसरा दृश्य

[वही कमरा, पर उसमें सोफासेट इत्यादि सजावट नहीं है, केवल कुछ साधारण कुर्सियां हैं और एक मेज। चित्र केवल लक्ष्मीजी और गणेशजी के टँगे हैं, 'तारक तारिकाओं' के अब वहां नहीं हैं। कमरे का यह भाग बाहर की ओर खुलता है जिसके आगे का मैदान एक छोटी सी चहार दीवारी से घिरा है। इसकी बगल में, एक कोने पर, बाहर जाने के लिये फाटक है। कमरे के द्वार खुले हुये हैं। एक द्वार के सामने इन्द्रानी मेजपर बैठी हुई रूमाल पर कढ़ाई का काम कर रही है। गले में वे ही आभूषण पहिने है। सुई की उस कारीगरी में उतनी ध्यानमग्न है अथवा क्षोभ में सनी बैठी है इसका पता बिलकुल पास से ही देखने पर शायद लग सके। जब कभी दरवाजे की दिशा में कुछ उझककर

देखती है तब लगता है कि किसी के आने की प्रतीक्षा कर रही है। उस प्रतीक्षा–भाव में रुद्रता अधिक व्यक्त होती है। एकबार कपड़े पर सुई चलाने की जगह अपने हाथ में चुभो लेती है। क्रुद्ध होकर कपड़े को मेज पर पटक देती है। जहां सुई चुभ गई थी वहां की मालिश करके फिर कपड़ा और सुई हाथ में ले लेती है और अब अपेक्षाकृत अधिक सावधानी बर्तती है। कुछ क्षण उपरान्त बाहरी दरवाजे से चाँदीलाल आता है। दफ्तर के बाबू की वेशभूषा में है। छीतरी ताने है जिसे वह कमरे के सामने आने पर बन्द कर लेता है। कमरे में आकर छीतरी एक कोने में टिका लेता है। इन्द्रानी ने मानो उसे देखा ही न हो। चांदीलाल कोट उतार कर खूंटी से टांगता है। फिर इन्द्रानी की ओर मुँह करके खड़ा हो जाता है। इन्द्रानी रूमाल पर सुई चलाती रहती हैं; उसकी तरफ नहीं देखती। चाँदीलाल उदास है]

चाँदीलाल—गुस्सा अभी तक शान्त नहीं हुआ ?

इन्द्रानी—हूं·····

चांदीलाल—उसमें मेरा दोष कम, मेरे भाग्य का दोष ज्यादा है।

(सिलाई का सामान मेज पर रख कर उसकी ओर सम्मुख होती है)

इन्द्रानी—क्या ? कैसा ?

चांदीलाल—मैंने उस हार को सोने का ही कह कर मंगवाया था, लेकिन·····

इन्द्रानी—लेकिन वह भाग्य से निकल पड़ा नकली ! यही न ? दाम तो तुम्हीं ने दिये थे हरनारायण को ?

चाँदीलाल—नहीं। हाँ हरनारायण ने अपने पास से दिये थे, मैंने आज चुका दिये। वह बहुत हितचिन्तक मित्र है अपना, बड़ा हितैषी—

इन्द्रानी—तभी तो धोखा देने के लिये मेरे लड़के का जन्म दिवस चुना उन्होंने। कौन जाने किसने क्या किया। मेरी तो बड़ी हेटी हुई।

चाय पीने के बाद पिंगला ने इस गहने की बड़ी ठठोली की। मुझे विश्वास था कि धोखा नहीं दिया गया है, इसलिये मैं अपने विश्वास पर अड़ी रही। मुझे दो रातों नींद नहीं आई। आज सवेरे जब तुमने कहा—

चांदीलाल—मुझे आज सवेरे ही पता चला। तुम जानती हो कि मुझे गहनों की कोई पहिचान नहीं—पर भई इस समय तो मेरे सिर पर एक मुसीबत है।

(उसकी अकल्पित 'मुसीबत' पर ध्यान न देकर अपनी खीझ में ही इन्द्रानी जा उलझती है)

इन्द्रानी—हां—आं घर गिरस्ती ही एक बड़ी मुसीबत है। मेरे लिये तो यह संसार ही मुसीबत है।

(हाय-सांसें भरती है। उसी समय बाहर के दरवाजे के पास से गाने के स्वर सुनाई पड़ते हैं)—

राम रमापति कर धनु लेहू,
खेंचहु चाप मिटहि सन्देहू।'

(उस दराजे से हरनारायण ऊपर की धुन गाता हुआ प्रवेश करता है और गाता हुआ कमरे में आता है। कमरे में आने पर गाना बन्द कर देता है। इस समय टोप लगाये है। बुशशर्ट और पैंट पहिने है। दोनों कपड़े खादी के हैं, खादी मिल या मोटे सूत की काती बुनी हुई है। हाथ की नहीं। चांदीलाल के चेहरे पर उत्सुकता छा जाती है। इन्द्रानी की खीझ पर हलकी छिछली मुस्कान का झीना आवरा आकर चला जाता है। हरनारायण टोप उतार कर कमरे की एक खूंटी पर टांग देता है। इन्द्रानी के ओठों पर मुस्कान फिर आ जाती है)

इन्द्रानी—आज यह क्या स्वांग ?

हरनारायण—इस अनित्य संसार में स्वांग ही तो एक बड़ी चीज है। परसों यहाँ जो कुछ हुआ वह स्वांग के सिवाय और क्या था ?

चांदीलाल—मतलब की बात करो यार मेरे—

हरनारायण—मतलब की ही कह रहा हूं।

इन्द्रानी—मेरे लिये नकली हार लाने में तुम्हें शरम न आई ?

(चांदीलाल एक कुर्सी लेकर पीठ फेर कर बैठ जाता है)

हरनारायण—आपही ने तो कहा था असली न मिले तो नकली मोतियों का हार ले आना।

इन्द्रानी—मैंने नकली सोने के हार के लिये कहा था ?

हरनारायण—पहले उस प्रश्न का उत्तर दे लूं जो आपने मेरे इस स्वांग के सम्बन्ध में किया है। देखिये स्वांग तीन तरह के होते हैं असली नकली और फसली। चांदीलाल का स्वांग असली है, मेरा फसली और आप का नकली—

चांदीलाल—(यकायक मुड़कर) अब काम की बात करो हरनारायण, मेरी उस मुसीबत का—

(चांदीलाल सन्तोष की सांस लेता हुआ भी उत्सुक दिखलाई पड़ता है। वह अपनी उत्सुकता को कुर्सी के दस्ते पर अपने एक हाथ की धीमी थपकियों से कुंठित करता है जैसे तबला बजा रहा हो। इन्द्रानी क्षुब्ध है)

हरनारायण—जब मुझे किसी पर रोब बिठलाना होता है तब टोप धारण कर लेता हूं क्यों कि इसका दबदबा अभी देश में बाकी है, और जब कभी किसी से कुछ लेना झटकना होता है तब यह पोशाक तो जीवन का अङ्ग ही बन गई है। यह सब फसल के अनुसार किया जाता है। अब रही आपके नकली स्वांग की बात सो वे साड़ियां इत्यादि फिल्मी अप्सराओं की नकल करने के लिये ही ली थी न ? अंग्रेजों की जन्म दिवस मनाने की प्रथा की नकल के लिये हुआ था न वह सब स्वांग ?

इन्द्रानी—बहुत सह लिया, बन्द करो यह बकबक। तुमने असली कहकर नकली स्वर्णमाला क्यों मढ़ी मेरे सिर ? असली सोना नहीं, जर्मन गोल्ड लाद गये तुम !

हरनारायण—रोल्ड गोल्ड, सोना सोना, सब एक हैं—मैसूर आस्ट्रेलियाई गोल्ड, दक्षिण अफ्रीकी गोल्ड, जर्मन गोल्ड—

इंद्रनी—जर्मन गोल्ड असली सोना है ? पीतल है, बिलकुल पीतल ! हे राम !!

हरनारायण—जब जिस चीज को जैसी आँखों देखो वैसी ही दिखलाई पड़ेगी—असली फसली और नकली।

चांदीलाल—(कुर्सी से खड़े होकर) मेरी तो दम घुटी जा रही है, बतलाओ मेरी उस मुसीबत का क्या इलाज किया ?

हरनारायण—सुनिये श्रीमती जी, इनके खिलाफ रिश्वतखोरी की शिकायत हुई है, उसी की जो परसों ली थी, जिसे देखकर आपका मन असली सोने के हार के लिये ललचाया था। सरकार ने भ्रष्टाचार की जड़ उखाड़ने के लिये एक विभाग खोला है। जहां हैसियत से ज्यादा तड़क भड़क का प्रदर्शन किया गया कि इस विभाग के पास सूचना पहुंची और उसने खबर ली।

चांदीलाल—मुझसे कल तीसरे पहर जवाब तलब किया गया है, इस कारण सारा समय अनमनेपन में गया।

इन्द्रानी—ओह ! फिर ? फिर ?

हरनारायण—इन्हें जवाब देना पड़ा कि उधार से काम चलाया गया है और हार नकली सोने का यानी जर्मन गोल्ड का है। मैं उस ठेकेदार के पास गया सावधान करने के लिये। टोप की यह सब टीमटाम धौंसपट्टी के लिये की। कह दिया ठेकेदार से कि यदि तुमने कोई बात खोली तो जेल जाओगे।

इन्द्रानी—मान गया ? मान गया न ?

हरनारायण—मान गया, अधमरा हो गया।

इन्द्रानी—मर जाय।

हरनारायण—जरूर मर जाय। वह क्या और ऐसे कई मरें तो उन सब की जायदाद तुम्हीं को तो मिलेगी! वह अकेले में बैठकर जो उङ्गलियों पर कुछ गिना करती हो, वह यही है न किसके पास क्या है और तुम्हें कैसे वह सब मिल जायगा?

इन्द्रानी—तुम हद के बाहर चले जाते हो! (बहुत खिन्न है)

हरनारायण—वह जर्मन गोल्ड का हार लेकर मैं हद के भीतर ही रहा। यदि वह असली सोने का होता तो रिश्वत साबित हो जाती और यह नौकरी से अलग कर दिये जाते।

(इन्द्रानी झुंझलाकर सिलाई का काम हाथ में ले लेती है, परन्तु निष्क्रिय है। बहुत उदास)

चांदीलाल—(उसांस लेकर) उस मुसीबत से तो बचेंगे, परन्तु कर्जा इतना हो गया कि अकेली तनखाह के बूते अदा नहीं कर पाऊँगा। उधर अब रिश्वत लेता हूँ तो फिर कहीं का न रहा।

हरनारायण—खर्चा कम कर दो।

(इन्द्रानी उठकर भीतर चली जाती है)

चांदीलाल—जेवर भी घर में कुछ नहीं हैं कि उन्हें बेचकर ऋण चुका सकूं।

(किंकर्तव्य विमूढ़ होकर टहलने लगता है)

हरनारायण—(यह सोचकर कि इसी समय चांदीलाल को दृढ़ निश्चय पर पहुँचा देना चाहिये) तुम्हारे साहूकार ने यह चिट्ठी दी है। देखो।

(जेब से एक लिफाफा निकालकर चांदीलाल को देता है। वह लिफाफा खोलकर पढ़ता है और उसाँसें भरने लगता है।

चांदीलाल—अब क्या हो ? साहूकार ने बहुत थोड़ा समय देकर धमकी दी है कि मियाद के भीतर उसका पूरा रुपया न चुकाया तो अदालत में दावा कर देगा और ऐसी परिस्थिति में मुकदमे का खर्चा भी देना पड़ेगा।

(नरसिंह आता है। वह हॉकी टीम की धारीदार कमीज और हाफ पैन्ट इत्यादि पहिने है)

नरसिंह—डैडी, डैडी हमारे टूर्नामेंट का प्रोग्राम बन गया है। मुझे—

चांदीलाल—(क्रुद्ध स्वर में) भाड़ में गया टूर्नामेंट ! मैं तो हूँ परेशानी में इधर तुम कि—

नरसिंह—(रुंआसे स्वर में) डै···ऐ···डी···मैंने क्या अपराध किया है ? स्कूल में आदेश आया है—

चांदीलाल—(पिघल गया है) क्या आदेश आया है ?

नरसिंह—(साहस बटोरता हुआ) आदेश आया है, जिला निरीक्षक का आदेश आया है कि खेल होंगे, नाटक होंगे, लोक नृत्य, वादविवाद, अन्त्याक्षरी, बहुत तरह के खेलकूद इत्यादि इत्यादि। एक सप्ताह तक यह सब चलेगा। इसके लिये दस रुपया चन्दा चाहिये। कुछ और भी लगेगा जो पीछे बतलाया जायगा।

चांदीलाल—नाकों दम आ गया है। समझ में नहीं आता कि क्या न करूँ, कैसे पार पाऊँ ?

नरसिंह—(बहुत रुंआसे स्वर में) हूँ···ऊँ···

हरनारायण—आवश्यक और अनावश्यक खर्चों का अन्तर और भेद समझ लेना चाहिये। इसे पढ़ाना है तो यह सब सहना पड़ेगा। अन्य खर्चों में कतर ब्योंत करो, परन्तु इसमें न कर सकोगे।

चांदीलाल—अच्छा बेटा, दूँगा। कब चाहिये है ?

नरसिंह—कल सवेरे । आज जिस कार्य में भाग लेना है उसमें नाम लिखा दूँगा । तो जाऊँ मैं ? (वह ठहरना नहीं चाहता)

चांदीलाल—हां । (नरसिंह जल्दी से जाता है)

हरनारायण—तुम्हें यह मकान बेचकर सब साहूकारों से पीछा छुटाना पड़ेगा ।

(चांदीलाल सिर पकड़ कर बैठ जाता है)

चांदीलाल—उफ ! मैं नहीं जानता था ।

हरनारायण—अब जितनी जल्दी जान जाओ उतना ही अच्छा । हिम्मत हारने से दुख का पहाड़ नहीं काटा जा सकता ।

चांदीलाल—इस समय सिवाय अंधेरे के मुझे और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता ।

हरनारायण—भाई मेरी गांठ में कुछ होता तो मैं जरा भी न हिचकता । मैं कहता हूं मकान बेचकर अपनी हैसियत के अनुकूल वाले किसी मकान में किराये से रहने लगो । नकली फसली खर्च छोड़कर जीवन में सादगी बर्तो । मजे में गुजर होगी और नरसिंह को शिक्षा भी दे लोगे ।

चांदीलाल—बड़ी कठिनाइयां सामने आयेंगी ।

हरनारायण—जी कड़ा करलो । आखिर मैं भी तो अपनी छोटी चादर के भीतर ही पैर पसारता हूं । तुम भी यही करो । मजूर लोग और निम्न मध्यम श्रेणी वाले कैसे अपनी नैया खेते हैं ?

चांदीलाल—चार हजार से ऊपर का कर्जा सिर पर है—

हरनारायण—और आगे रिश्वत लोगे तो यह कर्जा तो चुकाने से रहा, नौकरी से भी हाथ धो बैठोगे । शायद कोई और बड़ी आफत में जान और इज्जत फँस जाय । मुझे तो सिवाय मकान बेचने के और कोई मार्ग नहीं दिखता ।

(चांदीलाल यकायक खड़ा हो जाता है)

चांदीलाल—अब क्या हो ? साहूकार ने बहुत थोड़ा समय देकर धमकी दी है कि मियाद के भीतर उसका पूरा रुपया न चुकाया तो अदालत में दावा कर देगा और ऐसी परिस्थिति में मुकदमे का खर्चा भी देना पड़ेगा।

(नरसिंह आता है। वह हाँकी टीम की धारीदार कमीज और हाफ पैन्ट इत्यादि पहिने है)

नरसिंह—डैडी, डैडी हमारे टूर्नामेंट का प्रोग्राम बन गया है। मुझे—

चांदीलाल—(क्रुद्ध स्वर में) भाड़ में गया टूर्नामेंट ! मैं तोहूँपरेशानी में इधर तुम कि—

नरसिंह—(रूँआसे स्वर में) डै···ऐ···डी···मैंने क्या अपराध किया है ? स्कूल में आदेश आया है—

चांदीलाल—(पिघल गया है) क्या आदेश आया है ?

नरसिंह—(साहस बटोरता हुआ) आदेश आया है, जिला निरीक्षक का आदेश आया है कि खेल होंगे, नाटक होंगे, लोक नृत्य, वादविवाद, अन्त्याक्षरी, बहुत तरह के खेलकूद इत्यादि इत्यादि। एक सप्ताह तक यह सब चलेगा। इसके लिये दस रुपया चन्दा चाहिये। कुछ और भी लगेगा जो पीछे बतलाया जायगा।

चांदीलाल—नाकों दम आ गया है। समझ में नहीं आता कि क्या न करूँ, कैसे पार पाऊँ ?

नरसिंह—(बहुत रूँआसे स्वर में) हूँ···ऊँ···

हरनारायण—आवश्यक और अनावश्यक खर्चों का अन्तर और भेद समझ लेना चाहिये। इसे पढ़ाना है तो यह सब सहना पड़ेगा। अन्य खर्चों में कतर ब्योंत करो, परन्तु इसमें न कर सकोगे।

चांदीलाल—अच्छा बेटा, दूँगा। कब चाहिये है ?

नरसिंह—कल सवेरे । आज जिस कार्य में भाग लेना है उसमें नाम लिखा दूँगा । तो जाऊँ मैं ? (वह ठहरना नहीं चाहता)

चांदीलाल—हां । (नरसिंह जल्दी से जाता है)

हरनारायण—तुम्हें यह मकान बेचकर सब साहूकारों से पीछा छुटाना पड़ेगा ।

(चांदीलाल सिर पकड़ कर बैठ जाता है)

चाँदीलाल—उफ ! मैं नहीं जानता था ।

हरनारायण—अब जितनी जल्दी जान जाओ उतना ही अच्छा । हिम्मत हारने से दुख का पहाड़ नहीं काटा जा सकता ।

चांदीलाल—इस समय सिवाय अंधेरे के मुझे और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता ।

हरनारायण—भाई मेरी गांठ में कुछ होता तो मैं जरा भी न हिचकता । मैं कहता हूं मकान बेचकर अपनी हैसियत के अनुकूल वाले किसी मकान में किराये से रहने लगो । नकली फसली खर्च छोड़कर जीवन में सादगी बर्तो । मजे में गुजर होगी और नरसिंह को शिक्षा भी दे लोगे ।

चांदीलाल—बड़ी कठिनाइयां सामने आयेंगी ।

हरनारायण—जी कड़ा करलो । आखिर मैं भी तो अपनी छोटी चादर के भीतर ही पैर पसारता हूं । तुम भी यही करो । मजूर लोग और निम्न मध्यम श्रेणी वाले कैसे अपनी नैया खेते हैं ?

चाँदीलाल—चार हजार से ऊपर का कर्जा सिर पर है—

हरनारायण—और आगे रिश्वत लोगे तो यह कर्जा तो चुकाने से रहा, नौकरी से भी हाथ धो बैठोगे । शायद कोई और बड़ी आफत में जान और इज्जत फँस जाय । मुझे तो सिवाय मकान बेचने के और कोई मार्ग नहीं दिखता ।

(चांदीलाल यकायक खड़ा हो जाता है)

चांदीलाल—कितनी मुश्किलों से तो यह गोल कमरा बनवाया था, और यह सब सामान जुटा पाया था !

हरनारायण— इस भारी भरकम सामान की जगह हलका फर्नीचर *ले लेना।*

चांदीलाल—इस मकान को कोई सेठ साहूकार ही लेगा, पर लेगा दाम गिराकर। लागत पर ब्याज का पड़ता मकान के किराये पर बिठलायेगा। मकान बेचकर भी तो सारा कर्जा नहीं चुकाया जा सकेगा। (एक क्षण सोचकर) खर्चा लरूर कम करूँगा चाहे कुछ हो जाय और रिश्वत —

हरनारायण—कम नहीं बिलकुल बन्द करना पड़ेगा। अन्यथा किसी दिन बुरी तरह फंस जाओगे क्योंकि चेती हुई जनता अधिक समय तक पोल पट्टी नहीं सहेगी, सरकार को अवश्य सख्ती करनी पड़ेगी। अब खर्चा कम करो अन्यथा पार पाना बहुत ही दुष्कर होगा।

(चांदीलाल मेज पर बैठकर कुछ सोचने लगता है)

चांदीलाल—करता हूं बातचीत कुछ साहूकारों से। किसी दलाल से भी कहूँगा। हमारे साहूकार शायद कुछ समय के लिये मान जायें, क्योंकि इतनी जल्दी तो मकान अच्छे दामों पर बिकने से रहा। तुम भी कहीं जुगत लगाओ।

हरनायण—बजाज शायद कुछ समय के लिये ठहर जाय, पर वह दूसरा तो नालिश किये बिना मानेगा नहीं। फिर जैसे ही उसने नालिश की कि बजाज भी मैदान में आ जायगा। दलाल की मार्फत बात करना उचित नहीं जान पड़ता। इस साधन से तुम्हारी चला फिरी और झक तो बच जायगी, परन्तु दाम अच्छे नहीं आयेंगे। मैंने एक ऐसे खरीदार से बातचीत की है जो काफी रुपया देगा।

चांदीलाल—ऐं !

हरनारायण—हां।

चांदीलाल—कब बातचीत की ?

हरनारायण—चर्चा तो मैं काफी समय से उससे कर रहा हूँ, बात ढङ्ग की थोड़ी ही देर पहले हुई।

चांदीलाल—चर्चा काफी समय से चला रहे थे!

हरनारायण—हाँ, क्योंकि मैं जानता था कि यह मुसीबत एक न एक दिन आकर रहेगी।

चांदीलाल—बातचीत किससे की है ?

हरनारायण—पड़ोसी चिमनलाल बढ़ई से।

चांदीलाल—उससे ?

हरनारायण—हाँ, क्यों ?

चांदीलाल—कितने रुपये देने को तैयार होगा ?

हरनारायण—पाँच हजार (कुछ ठहर कर) और अढ़ाई सौ। बैनामे का खर्चा आधा आधा।

चांदीलाल—(कुछ सोचता हुआ) कोई भी साहूकार इतना देने पर राजी न होगा। इसका भी घर हमारे मकान से लगा हुआ है इसीलिये तैयार हो गया। सुनता रहा हूँ कि रुपया उसके पास बहुत है—

हरनारायण—जीवन भर मिहनत की है, घर भर करता रहता है, फजूल खर्च है नहीं; इसके पास रुपया न रुकेगा तो किसके पास ?

चांदीलाल—कोशिश करो तो शायद रकम और बढ़ा दे। (लालच भरी आँखों से देखता है)

हरनारायण—कर देखो, मेरे बस का नहीं।

चांदीलाल—(झटका खाकर जल्दी से) अरे भाई मेरे बसका तो और भी कम है।

चांदीलाल—बैनामा पाँच हजार का लिखा जायगा। पाँच हजार ही तुम्हें मिलेंगे। अढ़ाई सौ मैंने अपनी दलाली तै की है।

चांदीलाल—तुमने अपनी दलाली ?

हरनारायण—दलाली हैं और नहीं भी है। चिमनलाल को दलाली ही बतलाई है। ये रुपये मेरे पास तुम्हारे नाम से जमा रहेंगे। आठ आना सैकड़ा माहवारी का ब्याज दूँगा। कुल सवा रुपया महीना बैठा। पान तमाखू का मासिक खर्चा इसी के भीतर चलाओ। मितव्ययता का अभ्यास बढ़ेगा।

चांदीलाल—विचार बुरा नहीं है, मुझे जब जरूरत पड़ेगी तुमसे यह अढ़ाई सौ ले लूंगा।

हरनारायण—जी नहीं। मैं इस रुपये को अपने कारबार में लगाऊँगा। जब मुझे इसकी जरूरत नहीं रहेगी तब दूंगा, वैसे तुम्हें न दूंगा।

(इन्द्रानी जल्दी जल्दी आती है। उसकी त्योरी पर बल पड़े हैं)

इन्द्रानी—एक बात मेरी सुनलो।

चाँदीलाल—एक नहीं दो, कहो न।

इन्द्रानी—वह जो परसों पाँच सौ रुपये में बनारसी साड़ी ली थी वापिस कर दो। पूरे मूल्य पर वापिस न हो तो बट्टे पर जहां का तहां कर दो। मुझे जरूरत नहीं।

हरनारायण—वह जर्मन गोल्ड वाला हार—

चांदीलाल—(कुछ रुखाई के साथ) बीच में न बोलो। (इन्द्रानी से) तुम्हारी वह साड़ी वापिस न होगी। हार चाहे लौटा दो।

इन्द्रानी—हार नहीं लौटाऊँगी। नरसिंह के जन्म दिवस का उपहार है। अब साड़ी की मुझे जरूरत नहीं।

चांदीलाल—मुझे तो है। उसके लौटा देने से कर्ज का कितना भार हलक होगा ? मेरे मनमें जो कुढ़न बनी रहेगी उसे कोई नहीं कूत सकता। हार भी रक्खो। जो कुछ हो चुका, हो चुका। अब तो मुझे भविष्य की चिन्ता है।

इन्द्रानी—उसी को तो मैं दूर करना चाहती हूं। इसी घड़ी।

चांदीलाल—उसका उपाय किया जा रहा है। यह मकान बेच रहा हूँ। किराये के मकान में रहेंगे।

इन्द्रानी—हे राम ! (सिर पकड़ लेती है)

चांदीलाल—फिर कभी अच्छे दिन आयेंगे।

हरनारायण—खर्चे काम कर देने से अवश्य अच्छे दिन आयेंगे।

चांदीलाल—इन्द्रानी, मेरा साथ दो। हिम्मत मत हारो।

इन्द्रानी—हे राम ! यह दिन भी देखने को मिला !!

(जाती है)

चांदीलाल—अब तक जैसे रहते आये हैं उसमें कमी करना बड़ा कठिन होगा।

(चांदीलाल कुछ क्षण टहलता है। हरनारायण उङ्गलियों पर कुछ गिनती करता हैं)

चांदीलाल—(यकायक रुककर) बढ़ई से बातचीत पक्की कर लो।

हरनारायण—अभी हो जायगी। बुलाऊँ उसे ?

चांदीलाल—हाँ बुला लो। अब तो जो कुछ करना है अविलम्ब करूँगा। अपव्यय के साथ ढील भी खतम करने का निश्चय है। दफ्तर में भी कायदे कानून का बर्ताव करूंगा।

(हरनारायण थोड़ा-सा सशंक हो जाता है)

हरनारायण—यानी दफ्तर में आने जाने वालों से अच्छी तरह बोलोगे भी नहीं ! ईमानदारी और नम्रता में कोई शत्रुता तो है नहीं ?'

चांदीलाल—खैर वह आगे की बात है। (कुछ मुलायम पड़कर) अशिष्टता का बर्ताव नहीं करूँगा। रिश्वत न लेने की कसम खाता हूँ।

हरनारायण—जैसे कचहरी में गवाह कसम खाता है—सच बोलूंगा, सिवाय सच सच के झूठ न बोलूंगा, परमेश्वर मेरी मदद करे!

चांदीलाल—तुम सचमुच कभी कभी सीमा का उल्लंघन कर जाते हो।

हरनारायण—यही श्रीमती जी भी कहती हैं। मैं यह चला (जाने लगता है)

चांदीलाल—यह लो, बुरा मान गये! ठहरो।

(हरनारायण लौट पड़ता है)

हरनारायण—मैं न उनके कहने का बुरा मानता हूँ और न तुम्हारे कहने का।

चांदीलाल—(हल्की सी मुस्कान के साथ) भाई इस समय मेरा मन कुछ उद्विग्न है।

हरनारायण—यही क्षण दृढ़ होने का भी है। एक बात और कहनी है—मानोगे?

चांदीलाल—कह डालो।

हरनारायण—नौकर को अलग कर दो। हाथ से सब काम करो और कराओ।

चांदीलाल—तुमने दृढ़ होने के लिये कहा है मैं बिलकुल दृढ़ हूं। हाथ से काम करूँगा, अवश्य करूँगा परन्तु नौकर को नहीं हटाऊँगा। मैं सब कुछ भुगत लूंगा लेकिन अपनी पत्नी को किसी तरह का कष्ट नहीं झेलने दूंगा।

हरनारायण—अच्छा····· अच्छा मैं अब जाता हूँ। (जाता है)

चांदीलाल—भजन! ओ भजन!!

(भीतर से—'जी आया')

(भजन आता है। उसके हाथ साबुन के फेन से सने हैं जैसे कपड़े धो रहा हो)

चांदीलाल – नरसिंह की मां को भेज दो।

(हांमी का सिर हिलाकर भजन जाता है। चांदीलाल कमरे के फर्नीचर पर दृष्टि कमरे में इधर-उधर भटकती है जैसे कुछ ढूंढ़ रहा हो और उसे मिल न रहा हो। सांस उसांस लेता है इन्द्रानी आती है। उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई है।)

इन्द्रानी—क्या बात है ?

चांदीलाल—चिमनलाल बढ़ई को यह मकान पांच हजार रुपये में बेच रहा हूं। सारा ऋण चुक जायगा और समय कुसमय के लिये कुछ रुपये हाथ में बने रहेंगे। किराये के मकान में जा टिकेंगे। (इन्द्रानी की आंखों में आंसू आ जाते हैं वह कपड़े से पोंछती है) तुम्हें इसीलिये बुलाया कि सब बात कह दूं। दुख मत करो। तुम्हारे दुखी होने से मेरी दृढ़ता में बल पड़ जाने का डर है।

इन्द्रानी—(कांपते हुये स्वर में) मुझे बड़ा पछतावा है।

चांदीलाल—तुम्हें दुखी नहीं देख सकता।

इन्द्रानी—(सम्भलकर) इस मकान के बचाने का कोई उपाय है ?

चांदीलाल—कोई भी नहीं। अपने को पहले बचाना है। मकान तो फिर कभी बन जायगा।

इन्द्रानी—मेरे गहने, कपड़े --

चांदीलाल–अरे नहीं वह असम्भव है। वैसे भी वे थोड़े से ही हैं। औसर काज के समय काम आवेंगे। भविष्य में ऐरे गरे खर्च पर जरूर कड़ी निगाह तुम्हें रखनी होगी।

(बाहर के द्वार पर किसी के आने की आहट)

चांदीलाल—हरनारायण बढ़ई को लेकर आ रहे हैं; तुम जाओ।

(इन्द्रानी धीरे से भीतर चली जाती है। हरनारायण के साथ चिमनलाल आता है। वह चांदीलाल से रामराम करता है)

चांदीलाल—आओ मिस्त्री जी।

(चांदीलाल चिमनलाल को कुर्सी पर बिठलाना चाहता है, परन्तु वह नहीं बैठता है)

चिमनलाल—बात हो जाय तो चला जाऊँ। बहुत सा काम करने को पड़ा है।

हरनारायण—बात हो चुकी है। मकान का बैनामा कल पांच हजार रुपये में रजिस्ट्री हो जायगा। खर्चा आधा आधा।

चांदीलाल—मुझे स्वीकार है।

चिमनलाल—मैंने तो तुरन्त मान लिया था। वैसे यह मकान इतने का नहीं है। परन्तु सोचा कि हमारे धरोंदे के पास है और गिरस्ती बढ़ रही है, नये सिरे से बनवाने में समय बहुत लग जायगा। हम ठहरे मजूर मानस, उतने समय में कुछ और कमा खा लेंगे।

हरनारायण—इन्हें बियाने में कुछ रुपया दे दो और लिखा पढ़ी करालो। बाकी रुपया कल रजिस्ट्री के समय दे देना।

चिमनलाल—ठीक है। (जेब में से नोट निकालता है और गिनता है। पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[चांदीलाल वाले मकान का वही कमरा जिसके बाहरी आंगन पर छोटी चहारदीवारी थी और अब नहीं है। कमरे की बगल में आंगन की एक तरफ थूमोंदार टपरा बन गया है। इधर उधर अधबनी मेजें कुर्सियां और काठ-कबाड़ है। अरियां, बसूले इत्यादि औजार जहाँ तहां रक्खे हैं। बाहर से कमरे में सफाई जान पड़ती है। आगे का खुला आंगन वाला भाग भी हाल में स्वच्छ किया मालूम पड़ता है, परन्तु टपरे के आस पास अस्तव्यस्तता है। चिमनलाल जल्दी जल्दी एक कुर्सी

तैयार कर रहा है। धोती और अद्धी बाहों का कुर्ता पहिने है। सिर पर पुराना छोटा सा मुड़ासा बाँधे हैं। नेपथ्य में शोरगुल होता है। वह मुड़सा उतार कर माथे का पसीना पोंछता है कि बीरू की मां साधारण कपड़े पहिने आती है।]

बीरू की माँ—मेहमान आ उठे हैं, इधर तुम्हारा यह हाल है कि अभी तक काम नहीं छोड़ा। साँझ के पहले महूरत है, याद है ?

चिमनलाल— याद है, सोचा था यह एक कुर्सी तो बना ही लूं। आज सांझ तक तैयार करके दे देने का वादा था—

बीरू की मां—आज बीरू का जन्म दिन है। एक कोई हो सकता है—चाहे उसका जन्म दिन मनालो चाहे यह वादा पूरा करलो। मैं अकेली क्या क्या सँभालूं ?

चिमनलाल—बीरू कहां गया ?

बीरू की मां—दर्जी के यहां, न जाने कौन कौन से कपड़े सिलवाये हैं। लेने गया है।

चिमनलाल—काम बन्द किये देता हूं। वादा कल के लिये टाल दूंगा। (बिखरा हुआ सामान एक ओर रखने लगता है। पिंगला कमरे के भीतर द्वार से आती है)

पिंगला—अरे ! यहां तो अभी सब वैसा ही पड़ा हुआ है !!

बीरू की माँ—बस अब देर नहीं है मैम साॅब, बीरू के आने भर की कसर है।

(चिमनलाल सामान एक ओर रखने में अधिक शीघ्रता करता है)

पिंगला—तब तक मैं मुहल्ले की एक छोटी सी पार्टी निबटा आऊँ। (गमनोद्यत)

बीरू की माँ—नहीं मैमसाॅब, अब देर नहीं है। आपके बिना वह सब नाच गान फीका फीका लगेगा !

पिंगला—इन्द्रानी आवेंगी न ?

बीरू की माँ—जी हाँ।

पिंगला—अभी तक तो आई नहीं हैं। उनके आने तक मैं भी लौट पड़ूंगी। (जाती है)

बीरू की माँ—यह सब तुम्हारी ढीलपोल का नतीजा है। और देर लगाओ ! वादे पूरे करो !! सब मेहमान अपने अपने घर लौट जायेंगे।

चिमनलाल—काम बन्द कर दिया, एक तरफ फर्श बिछाये देता हूं, तकिये लगाये देता हूं। बुलाओ यहाँ सबको और कर दो शुरू काम। (कुछ सोचकर) पर यहां हमारी दूकान का फैलान पड़ा हुआ है। वहीं भीतर के आंगन में होने दो न उत्सव। फर्श वहीं रक्खा हैं। तकिये भी वहां है।

बीरू की मां—कैसे हो कैसे नही हो ! चांदीबाबू के लड़के नरसिंह की बरसगांठ यहीं होकर मनाई जाती थी। यहीं होकर हम अपने बीरू की मनायेंगे और उससे भी ज्यादा तड़क भड़क के साथ। नरसिंह, चाँदीबाबू, इन्द्रानी, पिंगला बीबी और वह हरनारायण भी तो आकर देखें कि हम उनसे किसी बात में कम नहीं हैं।

चिमनलाल—अच्छा ! अच्छा !! अच्छा !!! यहीं होकर करो। भीतर से फर्श उठा लाओ मैं झटपट बिछा दूंगा।

बीरू की माँ—फर्श पर और सब बैठ जायेंगे, पर उन लोगों के लिये तो कुर्सियां ही चाहिये। याद है तुम्हें वे कुर्सी पर बिठलाया करते थे ?

चिमनलाल—ठीक है, ठीक है। उठा लाओ फर्श तब तक मैं यह सब सामान जरा ठिकाने से रखे देता हूं। (बीरू की माँ जाती है। चिमनलाल सामान को और भी जल्दी समेट कर एक तरफ रखता है। बीरू की मां फर्श लेकर आती है, हाँफ रही है। परन्तु श्रम के कारण कुण्ठित नहीं हुई है। चिमनलाल ने अब दूकान का सामान सम्भाल कर

एक ओर रख दिया है। वे दोनों मिलकर फर्श बिछा लेते हैं। बीरू आता है। फिल्मी एक्टर और एक्ट्रेस तारक-तारिकाओं की चित्र छाप बुशशर्ट पहिने है और चमकते हुये साटन की हाफ पैंट। मोजे लाल रंग के। बालों में इतना तेल डाले है कि धूप लगने पर शायद बह पड़े।)

बीरू की माँ—आ गये बेटा, ठीक समय पर आ गये। उस तरफ कुर्सियाँ तो रख दो।

बीरू—तुम भी कैसी हो! यह सारे कपड़े मैल हो जायेंगे।

चिमनलाल—मैं रक्खे देता हूँ। (बीरू की माँ से) तब तक तुम कपड़े बदल आओ। बहुत मैले कुचैले पहिने हो।

बीरू की माँ—अरे बीरू, तू अपनी एक कुर्सी तो यहाँ रख ही ले।

(वे तीनों जाते हैं। बाहर से हरनारायण का प्रवेश। पूरी बाहों की कमीज और पतलून पहिने है। कपड़े कीमती नहीं है। टोप लगाये है)

हरनारायण—(अपनी कलाई घड़ी देखकर) यहाँ तो सिवाय फर्श के और कुछ नजर नहीं आता! (भीतर शोरगुल होता है) उत्सव भीतर होकर मनाया जा रहा है क्या? मिस्त्री! मिस्त्री जी!!

(चिमनलाल दो कुर्सियाँ टाँगे आता है। उसके पीछे एक कुर्सी लिये बीरू का प्रवेश)

चिमनलाल—यह आ गया मैं। (एक कुर्सी रखकर) बिराजिये इस पर। अब देर नहीं है।

(बीरू कुर्सी रख कर भीतर चला जाता है)

हरनारायण—यहाँ अभी से बिराजने में क्या रक्खा है? लगा लो सब सामान-यानी चाय वाय का भी। तब तक मैं चाँदीलाल को लेकर आता हूँ।

चिमनलाल—तो जल्दी आ जाना भैया।

(हां का सिर हिलाकर हरनारायण लौट जाता है)

(बीरू एक कुर्सी और लाकर रखता है। लाया इस तरह कि उसकी पोशाक से रगड़ न खा जाये)

चिमनलाल—तुम यहीं बने रहो। ऐसा न हो कि लोग आकर लौट जावें। कुर्सियां मैं लगाता हूँ।

बीरू – कमरे में ही होकर यह सब करते तो ज्यादा अच्छा रहता।

चिमनलाल—नहीं बेटा, अपनी दूकान के सामने ही ठीक रहेगा। कमरे का भी सामना पड़ता है। यहीं दूकान के पास मुरलीधर गोपाल की मूर्ति रहेगी। तुम्हें जो तस्वीरें टाँगनी हों यहीं कहीं लगा दो।

(चिमनलाल भीतर जाता है। बीरू कुछ फिल्मी तारक तारकाओं के चित्र दूकान के थूमों पर लटकाता है। चिमनलाल मुरलीधर कृष्ण की मूर्ति लाकर एक मूढ़े पर इस प्रकार रखता है कि सामने बैठे लोगों को दिखलाई पड़े। फिल्मी चित्र भी आंशिक रूप में दिखलाई पड़ते हैं, क्यों कि वे अपेक्षाकृत ऊँचाई पर टाँगे जारहे हैं। चिमनलाल और कुर्सियां भी लाकर रख देता है। और फिर छोटी छोटी मेजें लाकर उन कुर्सियों के सामने रखता है)

चिमनलाल—तस्वीरें लगा चुके होओ तो इन कुर्सियों और मेजों को जरा ठिकाने से रख दो। मैं थक गया हूँ।

बीरू—मेरे ये कपड़े—(बाकी बात संकेतों द्वारा व्यक्त करता है कि इनके गन्दे हो जाने का अन्देशा है)

चिमनलाल – अच्छा मैं ही लगाये देता हूँ। तब तक तुम मेजपोश लाकर मेजों को ढ़क दो। तुम्हारी माँ ने कपड़े बदल लिये हों तो उनसे कहो कि आंगन में आये हुओं को यहां लेकर आजावें।

बीरू—अच्छा। (भीतर जाता है)

(चिमनलाल मेज कुर्सियां तरकीब से लगाता है और जेब में पड़े हुये मैले रूमाल से झाड़ता पोंछता है। बाहर की तरफ से हरनारायण

और चांदीलाल आते हैं। चांदीलाल बहुत साधारण कपड़े पहिने है। परन्तु उसके चेहरे पर पहले का जैसा फीकापन नहीं है)

चिमनलाल—चांदीबाबू राम राम, हरनारायण जी राम राम।

(वे दोनों उसे प्रति नमस्कार करते हैं। वह उन्हें बिठलाता है)

चांदीलाल—नीचे फर्श पर ही सब लोग बैठते तो क्या बुरा था ?

चिमनलाल—अरे वाह ! ऐसे मौकों पर तो मेज कुर्सी ही शोभा देती हैं।

हरनारायण—और वे तस्वीरें। मूर्ति के ऊपर जड़ी फिल्मी कान्तों और कान्ताओं की तस्वीरें !!

चिमनलाल—(न समझ कर) थोड़ी देर की सजावट है। आप बाबू लोगों से ही तो लिया है हमने यह सब। (हँसता है)

हरनारायण—तो अब कोट पतलून पहिनकर आओ।

चिमनलाल—सो तो ये लड़के पहिनते हैं। मैं तो केवल यह मुड़ासा बदलूंगा। अभी आता हूं।

हरनारायण—पांच हजारी हो गये ! (मकान पर दृष्टि घुमाता है मानो कहता हो कि पांच हजार वाले इस मकान के मालिक हो गये हो) जरा शानबान के साथ रहो।

(चांदीलाल दूसरी तरफ देखने लगता है)

चिमनलाल—(कुछ खिसियाहट में) हम तो मजूर कारीगर हैं, गाढ़ी कमाई के पांच हजार ढाई सौ दिये थे—

हरनारायण—सो इन्हें (चांदीलाल की तरफ सिर हिलाकर) सब बता दिया था। खर्च से बच गये मिस्त्री जी !

चिमनलाल—तुमसे कौन जीते बाबू। ऐसे ही झटकते रहते हो।

(भीतर जाता है)

चांदीलाल—(चारों ओर देखकर) क्या से क्या हो गया यह मकान !

हरनारायण—लगता है जैसे भीतर भीतर रो रहा हो और ऊपर हँस रहा हो !

चांदीलाल—क्या मतलब ?

हरनारायण—मतलब यह है कि कुछ दिनों बाद यह मकान मिस्त्री के पास न रहेगा।

चांदीलाल—अब मैं उल्लू किस्म का नहीं, तुम बिलकुल उल्लू किस्म के आदमी हो गये हो ! उजाले में भी आंखें मीच लेने वाले !!

हरनारायण—आज जितनी धूमधाम मिस्त्री जी कर रहे हैं, आतिशबाजी वगैरह में रुपये का धुआं उड़ाने वाले हैं, देखा-देखी जो कुछ कर रहे हैं उसका अन्त कहां जाकर होगा ?

चांदीलाल—जीवन में उछलकूद और मस्त-मौजीपन का मूल्य है। यह न हो तो संसार भर में मातम छा जाय।

हरनारायण—रसोई के लिये चूल्हा जलाना पड़ता है; प्रकाश के लिये चिराग, लालटैन, मोमबत्ती, बिजली इत्यादि सब ठीक लेकिन चूल्हा जलाने या चिराग उजालने की जगह घर ही फूँक दिया जाय तो तमाशा कितनी देर चलेगा ?

चांदीलाल—यह ठीक है, पर यह भी ठीक है कि प्रसन्नता, हर्ष, मनोरञ्जन के लिये जो कुछ खर्च करना पड़े वह उस आनन्द का मूल्य है (कुछ पुरानी बातों का यकायक स्मरण करके) हां यह भी सही है कि इस मूल्य के ठीक ठीक आँकने का बोध पहले से अर्जित कर लेना चाहिये।

हरनारायण—वही मेरा नुस्खा-चादर के भीतर ही पैर पसारने वाली मेरी बात।

चांदीलाल—मोद-प्रमोद पर तुम्हें तो कभी एक कौड़ी खर्च करते देखा नहीं !

हरनारायण—मेरा आनन्द दूसरों के सिर रहता है।

चांदीलाल—बड़े ही मनहूस हो !

(नरसिंह पाट का एक तड़क भड़कदार गलीचा लिये आता है। फर्श पर बिछा कर उस पर एक कुर्सी रख देता है)

हरनारायण—यह किसके लिए ?

बीरू—अपने लिये। मैं बैठूंगा इस पर। मेरा जन्म-दिन है न ?

चांदीलाल—कितनी देर है ?

नरसिंह—बस अब आरम्भ होता है। (जल्दी से भीतर चला जाता है। भीतर आतिशबाजी चलती है)

हरनारायण—यही कहलाता है घर फूंक तमाशा देखना। बड़ों की देखा देखी हो रहा है यह सब। जन्म–दिवस के तमाशे से लेकर ब्याह–शादी बगैरह की धूमधाम तक देखा देखी में चढ़ाबढ़ी हो रही है। विनाश की ओर चले जा रहे हैं हम लोग। कान फूटे जा रहे हैं इन पटाखों फटाकों के मारे। समाज की जड़ों में देखा देखी की सुरंगें लग रही हैं—

चांदीलाल—(कानों पर रखकर) होगा·····

हरनारायण—कान मूँद लो, और आँखों पर—

(कुछ लड़कियाँ थालों में उजलते दीप सजाते आती हैं। वे स्वयं रङ्ग बिरङ्गी सजीली वेशभूषा में हैं। सबके गले में एक एक फूल माला पड़ी हुई है। वे सौम्य सुन्दरता की भव्य प्रतिमाये हैं। लड़कियां कृष्ण की मूर्ति की आरती नृत्य करती हुई उतारती हैं। इनके पीछे पिंगला, इन्द्रानी और बीरू की माँ तथा कुछ अन्य स्त्रिया आती हैं। पिंगला की वेशभूषा वैसी ही सजीली और बहुमूल्य है। इन्द्रानी की सादी है, परन्तु वह उसमें दिपती है। बीरू की माँ ने अपनी जो सजावट की है वह इतनी रङ्ग बिरङ्गी और भड़कीली है कि भौंड़ी लगती हैं। लिपस्टिक

और पाउडर पोते हैं। एक हाथ में बड़ा सा थाल लिये हैं जिसमें फूल मालायें रक्खी हैं। वह उन दोनों को कुर्सियों पर बिठला देती है। चिमनलाल के साथ बीरू आता है। उसके सिर पर फूलमाला लिपटी हुई है। हरनारायण चांदीलाल को हाथ और सिर के संकेत करता हैं मानो कह रहा हो कि इस साधारण से अवसर के लिये यह सब खुराफात हैं। चिमनलाल के हाथ में एक थाल है जिसमें कोई गहना रक्खा है। बीरू उस कुर्सी पर जा बैठता है जो उसने पाट के गलीचे पर रक्खी थी। चिमनलाल का मुड़ासा इन्द्रधनुषी रंगों का है, बाकी पोशाक वही-अपनी काम करने के समय की—इन्द्रानी गिरे मन से स्त्रियों के गले में एक एक माला डालती है। यह काम बिना कुछ कहे उसके सिपुर्द किया है। पुरुषों के गले में चिमनलाल डालता है। लड़कियां आरती करके मूर्ति के आसपास दीपों की थालियां रख देती हैं और बैठ जाती हैं। चिमनलाल गहने वाले थाल से मूर्ति की पूजा करता है। बीरू की मां भीतर से बाँस से खपचों की बनी एक छीतरी लाकर बीरू के पास रख देती है। नरसिंह हॉकी का डण्डा लिये आता है और इधर उधर अपने लिये उपयुक्त स्थान न देखकर बीरू की कुर्सी के डण्डे पर जा बैठता हैं। बीरू आंखें तरेरता है और उसे हटाने की कोशिश करता हैं।

बीरू की मां—वहाँ न बैठो भैया गलीचे पर बैठ जाओ।

नरसिंह—मैं नीचे नहीं बैठूंगा।

बीरू—तो मेरी कुर्सी के डण्डे पर तो न बैठ पाओगे।

चांदीलाल—यहाँ आ जाओ।

(नरसिंह चांदीलाल की कुर्सी के डण्डे पर बैठ जाता है और दाँत भींचता है। बीरू की माँ बीरू का पैर बांस की छीतरी में रखवाती है)

बीरू—(हँसकर) मैं अपना पैर नहीं फँसने दूँगा इसमें। (चाहता है फँसाया जावे)

बीरू की माँ—हमारे यहाँ यह रिवाज नहीं है। (बीरू को यह अच्छा नहीं लगता। बीरू की माँ कुछ क्षण छोतरी को दोनों हाथों से हिलाती है जैसे सद्यःप्रसूत बच्चे को हिला डुला रही हो)

(इन्द्रानी पिंगला से कुछ खुसफुस करती है जिससे बीरू की माँ के प्रति उनकी ग्लानि व्यक्त होती है)

हरनारायण—रिवाजों की खिचड़ी और फैशन की खिचड़ी हर जगह चल पड़ी है।

बीरू की माँ—हमारे यहाँ वैसा गीत नहीं गाया जाता। हमारे यहाँ सोहरा गाया जाता है और जिस तरह का नाच जुगों से होता चला आया है वैसा नाच होता है। अभी होगा।

चिमनलाल—(गहने वाले थाल को थोड़ा प्रदर्शित करते हुये) हमारे यहाँ असली चीजों का रिवाज है।

(इन्द्रानी का सिर झुक जाता है)

हरनारायण—असल तो वह है अखीर तक असल बना रहे। देखा-देखी में असल हो ही कितना सकता है? (इन्द्रानी सिर ऊपर उठा लेती है कुछ प्रसन्न है)

चिमनलाल—(बीरू की माँ से) बीरू के जन्म दिवस पर लो यह सोने का हार। (थाली समेत देता है। वह अन्य स्त्रियों को दिखलाती हुई पिंगला और इन्द्रानी के पास आती है। पिंगला कहती है—'हां आं ठीक है।' इन्द्रानी का हाथ उसके गले तक जाकर फिर नीचे आ जाता है। वह गले में कुछ भी नहीं पहिने है। चेहरे पर गम्भीरता है, कुछ विषाद से लिपटी हुई)

बीरू की माँ—असली सोने का है बीबी जी।

इन्द्रानी—(भीतर के विषाद को छिपाती हुई) ठीक है ठीक है। हर साल इसी तरह बनवाती पहिनती रहो। (हरनारायण थाल में से उठाकर देखता परखता है)

इन्द्रानी—मेरा जी मचलता रहा है। बाहर जाती हूँ।

चांदीलाल—ऐं ! अच्छा जाओ। (इन्द्रानी जाती है)

(पिंगला और बीरू की मां भौंचक्की सी रह जाती हैं)

बीरू की माँ—क्या हो गया इन्हें ?

पिंगला—जी मचला रहा है।

बीरू की माँ—मैं देखूँ ?

चाँदीलाल—नहीं। उन्हें कभी कभी यह हो जाता है। मन ठीक हो गया तो लौट आयेंगी। अपना काम करो।

हरनारायण—(जैसे कुछ सुन ही न रहा हो) है तो हार असली सोने का। असली फैशन का।

चांदीलाल—यदि नकल और फैशन का ऐसा ही बोलबाला रहा तो एक दिन जर्मन गोल्ड का कोई बहुत छोटा भाई भी पैदा हो जायगा।

हरनारायण—(थाल में गहने को रखकर) अकल की बातें करने लगे हो ! (चिमनलाल से) तुममें कुछ अकल तो है ही मिस्त्री, क्योंकि थोड़े से पुराने कपड़े अपने तन से अब भी चिपकाये हो, काफी अकल आगे आयेगी, आ के रहेगी। हर साल इतना सब कुछ करते करते अकल क्यों न आयेगी ?

चिमनलाल—(व्यङ्ग को न समझ कर) आपकी सबकी असीस चाहिये। (हरनारायण और चाँदीलाल थोडा–सा हँस पड़ते हैं। पिंगला को जोर की हँसी आती है) झटके देते रहिये बस।

बीरू की माँ की संगियों में से एक—सोहरे के लिये कुछ देर है क्या ?

बीरू की मां—नहीं तो, गाओ।

(कुछ स्त्रियाँ सोहरा गाती हैं। कुछ लोकनृत्य से–जिस क्षेत्र में जैसा प्रचलित हो–गीत–का साथ देती हैं)

सोहरा

आज दिन सोने को महाराज

सोने को सब दिन, सोने की रात, सोने को कलस धराओ महाराज।
गऊ को गोबर मँगाओ मोरी सजनी, ढिक देके अँगना लिपाओ महाराज।
ढिक देके अँगना लिपाओ मोरी सजनी, मोतियन चौक पुराओ महाराज।
चन्दन पटरी डराओ मोरी सजनी, कंचन कलस धराओ महाराज।
चौमुख दियला जगाओ मोरी सजनी, इमरत अरग दुआओ महाराज।
कौशल्या रानी चौकन बैठीं, लालन कंठ लगाओ महाराज।*

चिमनलाल—कैसा रहा बाबू साहबो ?

चांदीलाल—उपयुक्त और सुन्दर।

हरनारायण—कुरूप में सुरूप जैसे कांच के ढेर में सोने का एक छोटा–सा टुकड़ा। जैसे खिचड़ी में घी।

बीरू की मां—यह तो ऐसी ही बातें करते रहते हैं। (पिंगला से) बीबीजी, आपका एक गीत·····।

पिंगला—मैं नहीं गाऊँगी, गला खराब हो रहा है।

हरनारायण—चाय से ठीक हो जायगा ! अब उसी की कसर रह गई है।

चिमनलाल—अभी लीजिये। (बीरू से) जाओ करो बन्दोबस्त। रीत हो चुकी। (बीरू की माँ को भी संकेत करता है। बीरू भीतर जाता है)

---

*अर्थ—आज सोने का दिन है। हे महाराज, द्वार पर मङ्गल-कलश रखवा दीजिये। हे सजनी गाय का गोबर मँगवाकर आँगन लिपवा दो, ढिक (किनारी पोतनी से) दिलवा देना। फिर उसमें मोतियों का चौक पुरवाना। उस चौक में चन्दन की पटली रखवा देना। उसके पास भी सोने का कलश रहेगा। वही चौमुखा दीपक उजलवाना। जब ये दीपक दीप्तिमान हो जावे तब अमृत का अरग (अर्घ्य) करवाना। कौशल्या महारानी उस चौक में बैठकर अपने लाल को कंठ से लगावेंगी।

हरनारायण—इन्हें यहीं रहने दो। इनका तो अभी लिपस्टिकी डांस जो होना है।

(चांदीलाल और नरसिंह हँस पड़ते हैं और पिंगला तथा इन्द्रानी भी। इन्द्रानी कब लौट आई? बीरू की मां 'लिपस्टिक' शब्द से तो परिचित है ही, समझ जाती है कि उसका मखौल किया गया है। कुछ भुन्ना जाती है)

बीरू की मां—तुम्हारा स्वभाव ही कुछ अंडबंड है बाबू।

चांदीलाल—बिलकुल बेहूदा—सदा से कहता आया हूं।

हरनारायण—चाय वाय के बाद बदल जायगा।

(चाय का सामान आने लगता है। हरनारायण के सामने से आरम्भ होता है। बीरू परोस कर रहा है, चिमनलाल और बीरू की मां उसके सहायक हैं)

चिमनलाल—हरनारायण बाबू के सामने दुहरा रखना। इनका मुंह वैसे तो बन्द होने का नहीं।

हरनारायण—मैं आधे से अधिक न तो लूंगा और न खाऊंगा। क्योंकि साधारण तौर पर लोग जितना खाते हैं उसका आधा ही देह का पालन करता है और बाकी का आधा डाक्टरों की जेब भरता है।

चांदीलाल—होगा, इस समय उपदेश न झाड़ो।

हरनारायण—मैं तो अपनी बात कह रहा हूं। देखा देखी में बढ़ा चढ़ी करने वालों की नहीं, क्योंकि उनके दिमाग की मरम्मत डाक्टर और साहूकार ही कर सकते हैं।

(चिमनलाल के मुंह से 'एं!' निकलता है। पिंगला और चांदीलाल यकायक विचार की मुद्रा में। किसी की आंखें ऊपर की ओर, किसी की नीचे। अन्य लोग इधर उधर देखने लगते हैं। एक क्षण के लिये स्तब्धता छा जाती है। उसी समय पर्दा गिरता है)

समाप्त

39876
21·6·15

Library IIAS, Shimla
H 812.6 V 59 D
00039876